चन्दामामा
दिसम्बर १९८८
Rs 3

राम और श्याम
पारले
की सूझबूझ का कमाल
पड़ोस के बैंक की ओर निकले राम और श्याम,
मममम... पॉपिन्स!
अरे!
बैंक के हमारे दोस्तों की जान है खतरे में, चलो जल्दी कुछ करें.
बैंक के पिछले दरवाज़े से घुसे राम और श्याम.
हैंड्स-अप!
चलो इन्हें मज़ा चखाएं!
दबे पांव राम और श्याम लुटेरों के पीछे पहुँचे, पॉपिन्स के बंद पैक उनकी पीठ पर बंदूक की तरह कोंचे.
हैंड्स-अप!
घबरा गए लुटेरे, तुरंत बंदूक फेंकी, राम और श्याम ने इनके चारों तरफ बांध दी रस्सी.
शाबाश राम और श्याम!
कैसे जुटायी इतनी हिम्मत?
ये तुम्हारी सूझबूझ का है कमाल!
पारले
पॉपिन्स
POPPINS
रसीली.प्यारी.मज़ेदार.

डायमंड कामिक्स में
चाचा चौधरी
चाचा चौधरी एक ऐसा आदमी जिसका
दिमाग कम्प्यूटर से भी तेज चलता है।
और ज्यूपिटर ग्रह से आया हुआ उसका
शक्तिशाली साथी साबू
ये दोनों किसी भी समस्या को
हंसते-हंसते सुलझा लेते हैं।
और बड़े से बड़े खतरे से
टकराने का
साहस रखते हैं।
चाचा चौधरी का नया कारनामा
चाचा चौधरी गुलामों की बिक्री
6/-
चाचा चौधरी के अन्य कॉमिक्स
चाचा चौधरी और रोबोट 5.00
चाचा चौधरी और हीरों की चोरी 5.00
चाचा चौधरी और साबू पर हमला 5.00
चाचा चौधरी और चंपत संपत 5.00
चाचा चौधरी और राका का इंतकाम 6.00
चाचा चौधरी और हकीम कमालगोठा 5.00
चाचा चौधरी और पलीते की कमर 5.00
चाचा चौधरी और पोपटलाल 5.00
चाचा चौधरी और उड़ने वाली कार 6.00
चाचा चौधरी और हाथी का व्यापार 5.00
चाचा चौधरी, बिल्लू और पिंकी 6.00
चाचा चौधरी और राका की वापसी 6.00
चाचा चौधरी का धमाका 5.00
चाचा चौधरी और साबू की शादी 6.00
चाचा चौधरी अमेरिका में 6.00
चाचा चौधरी और साबू का बूट 6.00
चाचा चौधरी और क्रिकेट मैच 6.00
चाचा चौधरी और रहस्यमय चोर 6.00
चाचा चौधरी और राका 6.00
चाचा चौधरी और साबू काले टापू पर 5.00
चाचा चौधरी और कैराटे सम्राट 5.00
चाचा चौधरी और बैंक के लुटेरे 5.00
चाचा चौधरी और बोतल का जिन्न 5.00
चाचा चौधरी और गब्बर सिंह से टक्कर 5.00
चाचा चौधरी और अकबरी खजाना 5.00
चाचा चौधरी और साबू का अपहरण 6.00
चाचा चौधरी अन्तरिक्ष में 5.00
चाचा चौधरी और आदमखोर 5.00
चाचा चौधरी और साबू का हथौड़ा 5.00
चाचा चौधरी और शिकारी लकड़बग्गा सिंह 5.00
चाचा चौधरी और मैडम वारे 5.00
अन्य नये डायमण्ड कॉमिक्स —
पिंकी और चीनी गुब्बारा
पलटू और बीमार बुढ़िया
महाबली शाका और रहस्यमयी नगरी
चाचा भतीजा और दुष्ट महाकाल
राजन इकबाल और कातिल किंग
डायमंड कामिक्स प्रा. लि. 2715, दरियागंज, नई दिल्ली-110002

चन्दामामा

दिसम्बर 1988

★

विषय-सूची

★

एक प्रति : ३-००

वार्षिक चन्दा : ३६-००

मस्ती जब छाये
क्रैक्स हो जाये !

'चटपटा' या 'रैडी सॉल्टेड'
जो भी चाहे खाओ,
मौज मस्ती स्वाद के संग
खुशियाँ मनाओ !

क्रैक्स पॉकेट पैक सिर्फ़ रु० 1.50

CRAX CORN PUFFS

कुरकुरे, स्वाद-भरे, मज़ेदार क्रैक्स !

OBM/246/Hindi

चन्दामामा

संस्थापक : 'चक्रपाणी'
संचालक : नागिरेड्डी

मनुष्य अपने अस्तित्व के लिये अनेक प्रकार से धनार्जन करता है, लेकिन स्वयं कष्ट करके धन कमाने में जो आनन्द और संतुष्टि प्राप्त होती है, उसका अपना और ही विशेष महत्व होता है। दूसरों के श्रम और धन नष्ट हो जाने की बात आदमी सहन कर सकता है; मगर जब खुद के श्रम का फल प्राप्त न हों, तो वह बात वह सह नहीं सकता है। इस सत्य का बोध हमें "श्रम का मूल्य" नामक कहानी द्वारा होता है।

अमरवाणी

लुब्धमर्थेन गृह्णीयात, स्तब्धमंजलि कर्मणा,
मूर्खं छन्दानुरोधेन, याथातथ्येन पंडितम् ॥

[धन के द्वारा कंजूस को, विनय के द्वारा कठिन हृदयवाले को, प्रशंसा के द्वारा मूर्ख को, तथा सत्यवचन के द्वारा पंडित को अपने वश में किया जा सकता है।]

वर्ष : ४१ दिसंबर १९८८ अंक : ४

एक प्रति : ३-०० :: वार्षिक चन्दा : ३६-००
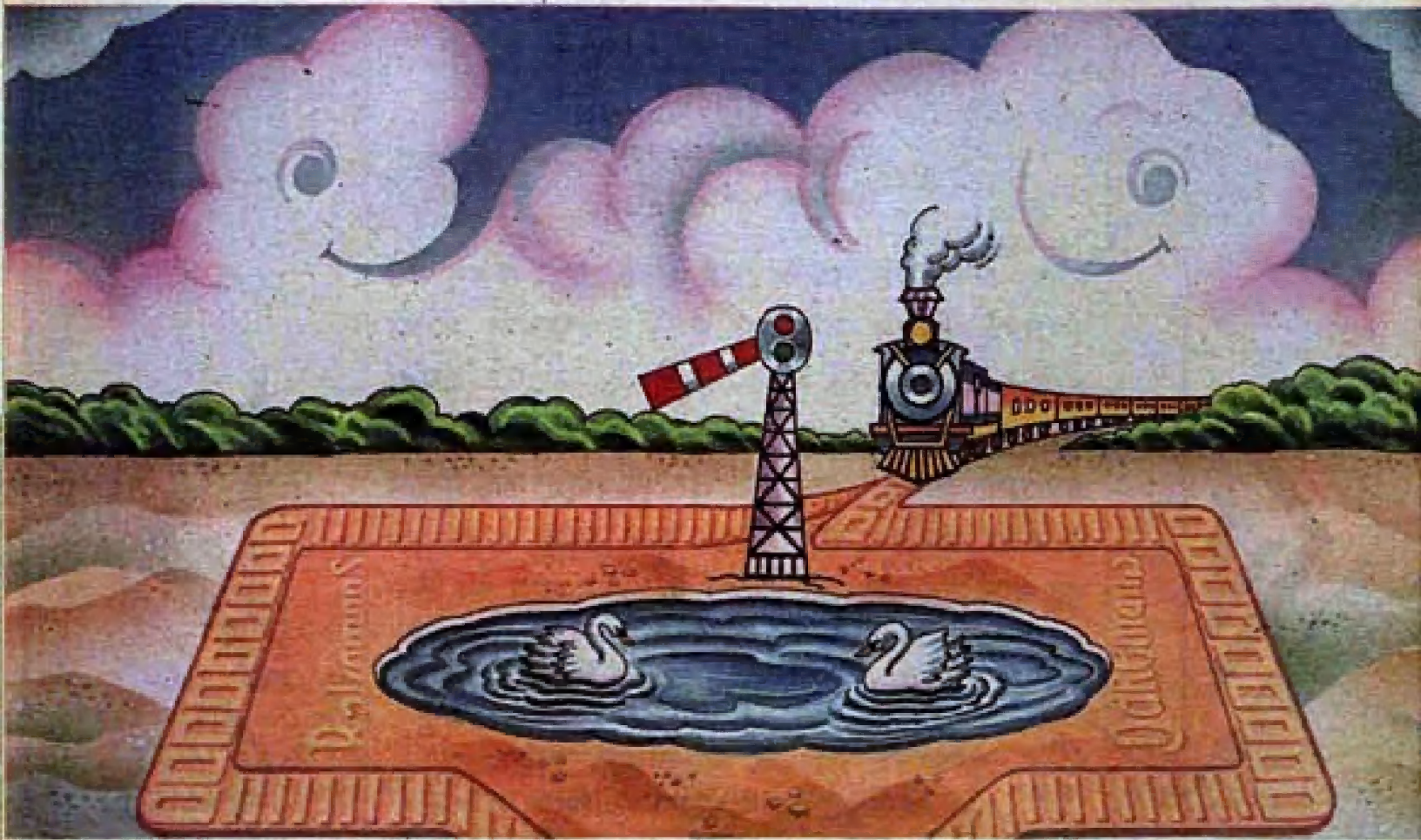
CHITRA

चन्दामामा के सम्वाद

अंगारक ग्रह् में क्या प्राणियों का निवास है ?

बैंकिंग खगोलशास्त्र विभाग ने जो फोटो खींचे हैं, उन में से कुछ फोटो जटिल प्रश्न-चिन्ह् बन बैठे हैं । उन फोटो में अंगारक ग्रह् के उपरी तल में पिरामिड़ जैसी विशाल आकृतियाँ दिखायी देती हैं । अब सवाल यह् है, कि ये आकृतियाँ सहज रूप में वहाँ उत्पन्न हुई हैं अथवा किसी के द्वारा निर्मित हैं ।

विश्व का सब से बड़ा धनी

जापान के निवासी योषिया की ट्सुटसुमी अनेक रेल्वे कंपनियों के स्वामी हैं । एक सर्वेक्षण द्वारा यह सिद्ध हुआ है कि इस वर्ष का विश्वभर में सब से बड़ा धनी आदमी यही है ।
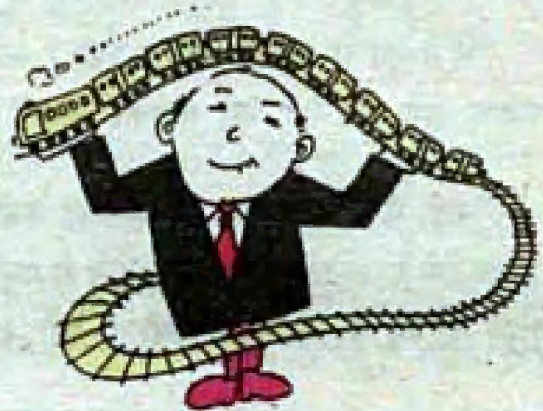
घोंघों की प्रतियोगिता

स्पेन में हाल ही में घोंघों के बीच एक प्रतियोगिता चलाई गयी । इस प्रतियोगिता में ७९ घोंघों ने भाग लिया । प्रतियोगिता बस यही थी कि उन से बन्धे रस्सियों को खींच ले जाना । हर्कुलिस नामक घोंघे ने इस प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार प्राप्त किया । २४० ग्राम वजन के पत्थर को दस मिनिटों में यह घोंघा ४२.५ सें. मी. दूर तक खींच ले गया । इस प्रतियोगिता में कुछ घोंघे पत्थर खींच ले जाने के बदले उन पर चढ़ने लगे थे ।
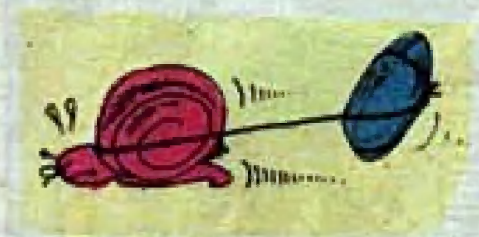
चीन की बालिका का नया प्रतिमान

चीन की चानलुनमेय नामक १४ साल की बालिका ने भारोत्तोलन में विश्व का नया प्रतिमान स्थापित किया है ।

शंका का निवारण

गौतमी नाम की एक गृहिणी के मन में एक बार यह शंका पैदा हुई कि, दर असल इस संसार में झगड़े क्यों होते हैं ? उसने कई लोगों से अपनी इस शंका का निवारण करने का अनुरोध किया; पर कोई भी उसे ठीक जवाब नहीं दे पाया। एक दिन कोई एक बैरागी उसके द्वार भिक्षा माँगने आया। गौतमी ने उससे पूछा, "स्वामीजी, इस संसार में लड़ाई-झगड़े होने का कारण क्या है ?"

"मैं तुम से भिक्षा माँग रहा हूँ, और तुम भिक्षा न देकर यह अंटसंट प्रश्न क्यों पूछ रही हो ?" बैरागी ने खीझकर कहा।

"मैं ने तुम से अंटसंट सवाल पूछा ? अरे दर दर भीख माँगनेवाले दुष्ट, तुम्हारी ऐसी हिम्मत ? इतना घमण्ड तुम को ?" यह कहकर गौतमी उस से झगड़ा करने पर तुल गयी।

"माई, मैं ने एक ज़रा सी कड़ी बात कही, तो तुम्हें कैसा गुस्सा आया देखो। मनुष्यों के बीच झगड़ा उत्पन्न होने के अनेक कारण हैं। उन में से प्रमुख है—मुँह पर नियन्त्रण न होना। यही बात तुम्हें समझाने के लिये ही मैं ने यह बात कही। मुझे क्षमा कर दो।" बैरागी ने कहा।

अद्भुत पेय

धर्मगिरी का राजा भद्रावती के राजा भानुचन्द्र का सामन्त था। एक बार पड़ोसी देश जयन्तपुर के राजा विजयवर्मा ने धर्मगिरी पर हमला कर उसे अपने अधिकार में ले लिया। यह समाचार थोड़े विलम्ब से ही राजा भानुचन्दर को मिला।

राजा भानुचन्द्र ने बड़ी सेना के साथ विजयवर्मा पर धावा बोल दिया और उसे परास्त कर दिया। धर्मगिरी का राज्य उसने फिर अपने सामन्त को सौंप दिया। उस समय सामन्त राजा ने भानुचन्द्र को एक विशाल पीपा भेंट किया और कहा, "महाराज, इस पीपे में एक अद्भुत पेय है। आप और आप का परिवार इसको पी लीजिये— मुझे बड़ा संतोष होगा।"

पीपे का पेय राजा भानुचन्द तथा उसके सैनिकों ने पी लिया और वे बेहोशी की हालत में नाच कर आखिर धुत् होकर गिर पड़े।

दूसरे दिन सूर्योदय के बाद राजा भानुचन्द्र ने सामन्त को बुलवा लिया और उससे पूछा, "तुम ने हम को जो पेय भेंट किया है, उसे तुम ने कहाँ से मँगवा लिया? बड़ा अभुदुत गुणोंवाला यह द्रव मालूम होता है। सभी दुख और पीड़ाओं को भगाने का गुण इसमें अवश्य है। कल हम ने इसका सेवन किया तो बड़ा मज़ा आया। गहरी नींद सोते रहे रात भर!"

राजा का प्रशन सुनकर सामन्त बहुत प्रसन्न होकर बोला, "महाराज धर्मगिरि में ही यह पेय बनाया जाता है। यहाँ के एक विशेष किस्म की वनस्पति से यह पेय बनता है। आप की बात मैं नहीं जानता, पर आप के सैनिक इस पेय को पीकर आज सुबह कह रहे थे कि उन सब ने पिछली रात मानों स्वर्ग में विहार किया है।"

"ओह, ऐसी बात है?" इतना कहकर भानुचन्द्र ने सिर हिलाया और पूछा, "क्या यह

शिवनागेश्वर

पेय तुम्हारे पिता व दादा के ज़माने से धर्मगिरि में तैयार करते आ रहे हैं ?"

"नहीं महाराज, दो वर्ष पूर्व एक विदेशी व्यापारी ने यह पेय मुझे भेंट किया। उसे पीकर मैंने अत्यन्त आनन्द और आल्हाद का अनुभव किया। मैंने सोचा—इस पेय को अगर अपने देश में तैयार कर सकें तो कितना अच्छा होगा। जो आनन्द मुझे मिला, उसका अनुभव और लोगों को भी क्यों न मिले ? सब लोगों के सुख की वृधि्द हुई तो इससे बढ़कर सत्कार्य क्या है ! इसलिये मैंने उस व्यापारी से इसे तैयार करने का तरीका जान लिया है।" सामन्त ने नम्रता से कहा

राजा भानुचन्द इसपर दो पल मौन रहा और फिर उसने कहा, "तुम यह दो वर्ष पूर्व की बात कह रहे हो। मैं उसके बाद का समाचार जानने के लिये उत्सुक हूँ—ज़रा विस्तारपूर्वक सब कह दो तो !"

सामन्त ने इस प्रकार विवरण दिया—

विदेशी व्यापारी से प्राप्त अद्भुत पेय पीने पर सामन्त के मन में आया—ऐसा अपूर्व सुख देनेवाले पेय का आस्वाद अपनी प्रजा को भी देकर उनसे प्रशंसा सुन लूँ।

सामन्त ने तत्काल अपने मन्त्री को बुलवाकर कहा, "मन्त्री महोदय, मैं रोज़ाना यह पेय अपनी प्रजा में बँटवाना चाहता हूँ। इस के लिये आवश्यक सामग्री और कर्मचारियों की व्यवस्था कीजिए।"

इस के एक सप्ताह बाद सामन्त ने प्रधान केन्द्रों में निःशुल्क पानशालाओं का प्रबन्ध करवाया और उस अद्भुत पेय का जनता में वितरण करवाया। प्रारम्भ में एक हज़ार पीपों के साथ यह कार्य चला तो कुछ ही दिनों में पच्चीस हज़ार पीपों तक यह संख्या पहुँची। इस योजना को अमल में लाने के लिये नियुक्त किये कर्मचारियों के वेतन-भत्ते, पीपों के यातायात के खर्च वगैरह कुल मिलाकर प्रतिमास एक सौ स्वर्णमुद्राओं से अधिक तक बढ़ गये।

सामन्त इस अतिरिक्त खर्च की समस्या हल करने का उपाय सोचने लगा; तब उसके सामने और एक समस्या उपस्थित हो गयी। जनता अपनी माँग के अनुसार पेय न पाकर कुपित हो गयी और एक दिन उन लोगों ने पानशाला के दो

कर्मचारियों की हत्या कर डाली ।

इस बात को लेकर सामन्त ने अपने मन्त्री से मन्त्रणा की, तो मन्त्री ने उस पेय के सेवन पर तुरन्त निषेध लगाने की सलाह दी । लेकिन सामन्त ने सोचा कि इस पेय का थोड़ा बहुत मूल्य रखा जाए तो ख़ज़ाने की आमदनी बढ़ेगी—वैसे तो केवल धनवान ही इसे खरीदेंगे । अब हत्याएँ नहीं होंगी ।

दूसरे ही दिन उस पेय का दर निश्चित किया गया । मगर आश्चर्य की बात यह हुई कि, मुफ़्त में पेय बाँटे जाते वक़्त पचीस हज़ार पीपे पेय खर्च होता था तो अब बिक्री शुरू होने पर वह संख्या अच्छी होने लगी । पानशाला के सामने लोग क़तार बाँधकर खड़े होने लगे । पेय का मूल्य देने में किसी को कुछ कठिनाई नहीं हुई । दिन-ब-दिन पेय की लोकप्रियता बढ़ती हो रही । रोज़ अधिकाधिक संख्या में पेय के ग्राहक बढ़ते गये ।

सामन्त राजा इस अतिरिक्त आमदनी द्वारा समाज-कल्याण संबंधी योजनाएँ चलाने की बात सोचने लगा । उसकी योजनाएँ इस प्रकार की थीं—पहले छः महीनों की आमदनी अनाथ बच्चों के लिये और अगले छः महीनों की आमदनी सैनिकों के वेतन बढ़ाने के काम में लगाई जाये । अनाथ बच्चों के विवरण के साथ एक प्रतिवेदन तैयार हुआ । उन बच्चों की संख्या कुल दस हज़ार थी ।

समाज-कल्याण-योजना अमल करने पर छः महीनों बाद उसका जो प्रतिवेदन प्राप्त हुआ उसकी जाँच सामन्त ने की । उस में अनाथ बच्चों की संख्या पच्चीस हज़ार दिखाई गयी थी । इस
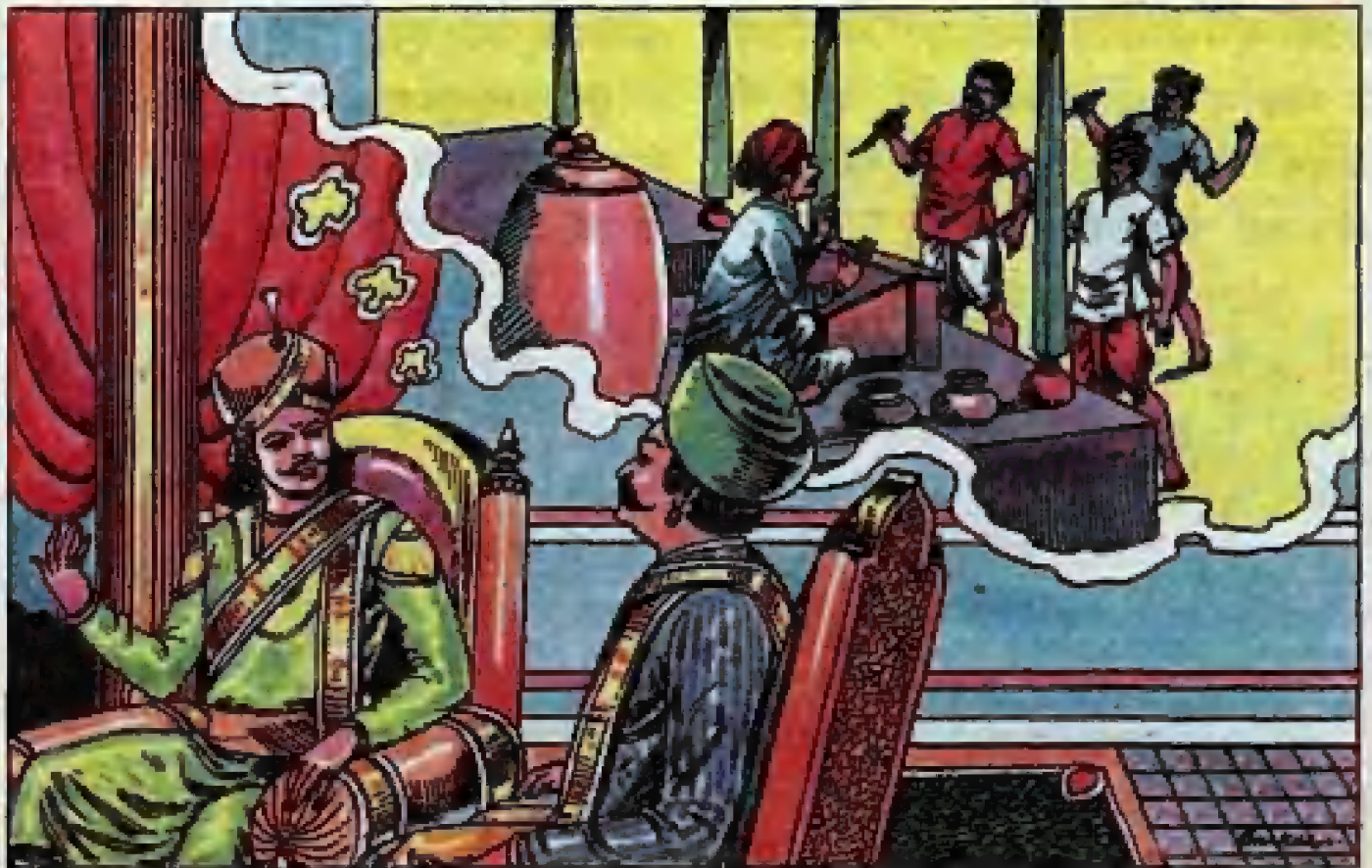
पर उसे बड़ा ताज्जुब हुआ । उसने एक दिन छद्मवेष में नगर-संचार किया । नगर की गलियों में भीख माँगनेवाले अनेक अनाथ बच्चों को सामन्त ने देखा । उसने उन बच्चों से पूछा, "तुम लोग क्यों भीख माँग रहे हो ?"

"महाराज, इस देश के राजा द्वारा बिक रहे पेय को पीकर हमारे में से कुछ के अभिभावक मर गये हैं; कुछ भयंकर बीमारियों के शिकार होकर तड़प रहे हैं । कुछ और लोग उस पेय के गुलाम बनकर हमारा पालन-पोषण नहीं कर पाये—इस कारण उन्होंने हम को घर से खदेड़ दिया है ।" अनाथ बच्चों ने अपनी व्यथा सुनायी ।

इस के बाद सामन्त ने अपने सैनिकों के वेतन दुगुने कर दिये और छः मास बाद उनकी भी रपट अपने मन्त्री से माँगी ।

मन्त्री ने कहा, "महाराज, सैनिकों के बीबी बच्चों ने जो पच्चीस हज़ार शिकायती पत्र आपकी सेवा में भेजे हैं, उनका अवलोकन करने पर सही हालत का ब्योरा मालूम हो जाएगा । नया प्रतिवेदन तैयार करने की कोई ज़रूरत ही नहीं है ।" यह उत्तर देकर मन्त्री ने तुरन्त शिकायती पत्र मंगवा लिये ।

दो-चार फरियाद पढ़ लेनेपर सामन्त ने भाँप लिया कि उसके सैनिक इस पेय के ग़ुलाम बनकर अपने वेतन में से एक कौडी तक घर नहीं भेज रहे हैं ।

सही हालत जानकर सामन्त बहुत दुखी हुआ । उसने मन्त्री से पूछा, "जनता के सुख के लिये मैं ने यह पेय बनवाया, मगर इसका ऐसा कुपरिणाम क्यों हुआ ?"

मन्त्री विनयपूर्वक बोला, "महाराज, इस वक्त जेल में कैदियों की संख्या पहले जैसे तीन हज़ार ही नहीं, बल्कि पचास हज़ार है । इनमें से आधे लोगों ने पेय के लिये धन के अभाव में अपराध किये हैं, तो बाकी आधे लोगों ने पेय-सेवन के बाद नशे में आकर अपराध किये हैं ।"

इस स्थिति पर व्याकुल होकर सामन्त बोला, "मेरा मन इस वक्त अत्यंत विकल है । तुम जाकर दरबारी गायक कपिल शर्मा का संगीत सुनवाने का प्रबन्ध करो ।"

कपिलशर्मा आ पहुँचा; मगर वह तो एकदम शिथिल हो चुका था । फिर भी राजा का आदेश

पाकर उसने गाना शुरू किया । उस का स्वर कर्ण-कठोर था । जनश्रुति तो यह थी, कि कपिलशर्मा गाने लगता है तो सुननेवाले साँस रोककर सारी शक्ति कानों में एक करके सुनते रहते हैं ।

पर अब यह गाना सुनकर सामन्त ने मन्त्री से पूछा, "यह कपिल शर्मा को क्या हो गया है मन्त्री महोदय ?"

"यह भी उसी पेय का फल है महाराज, उस पेय ने असंख्य मेधावियों का सर्वनाश किया है ।" मन्त्री ने उत्तर दिया ।

यह वृत्तान्त सुनकर धर्मगिरी के सामन्त का सिर झुक गया ।

यह सारी हकीकत सामन्त के मुँह से सुनकर भानुचन्द्र बोला, "राज्य की यह दुर्दशा है । इसीलिये जयन्तपुर के राजा विजयवर्मा ने बड़ी आसानी से आप के राज्य पर अधिकार कर लिया था ! तुम जिस अद्भुत पेय की बात कर रहे हो, उसपर इसी क्षण से निषेध लगा दो ।" सामन्त को इस प्रकार आदेश देकर भानुचन्द्र अपने राज्य को लौट गया ।

लेकिन एक महीने के अन्दर ही विजयवर्मा ने फिर धर्मगिरि पर अधिकार कर लिया । यह समाचार भानुचन्द्र को मिलनेपर भी उसने विजयवर्मा को भगाने की कोशिश नहीं की और कोई उपाय सोचकर वह मौन रहा । उसने जयंतपुर राज्य में अपने एक भेदिये को भेज दिया । भेदिये ने छः महीनों के बाद आकर राजा भानुचन्द्र से कहा, "महाराज, धर्मगिरि के सामन्त का अद्भुत पेय विजयवर्मा के राज्य में भी फैल गया है और उस राज्य में भी अराजकता फैल गयी है ।"

भानुचन्द्र ने तत्काल जयन्तपुर के राज्य पर हमला कर के बड़ी ही आसानी से उस पर कब्जा कर लिया और 'अद्भुत पेय' के नाम पर प्रचलित उस विचित्र विनाशकारी पेय पर सखत निषेध लगा दिया ।
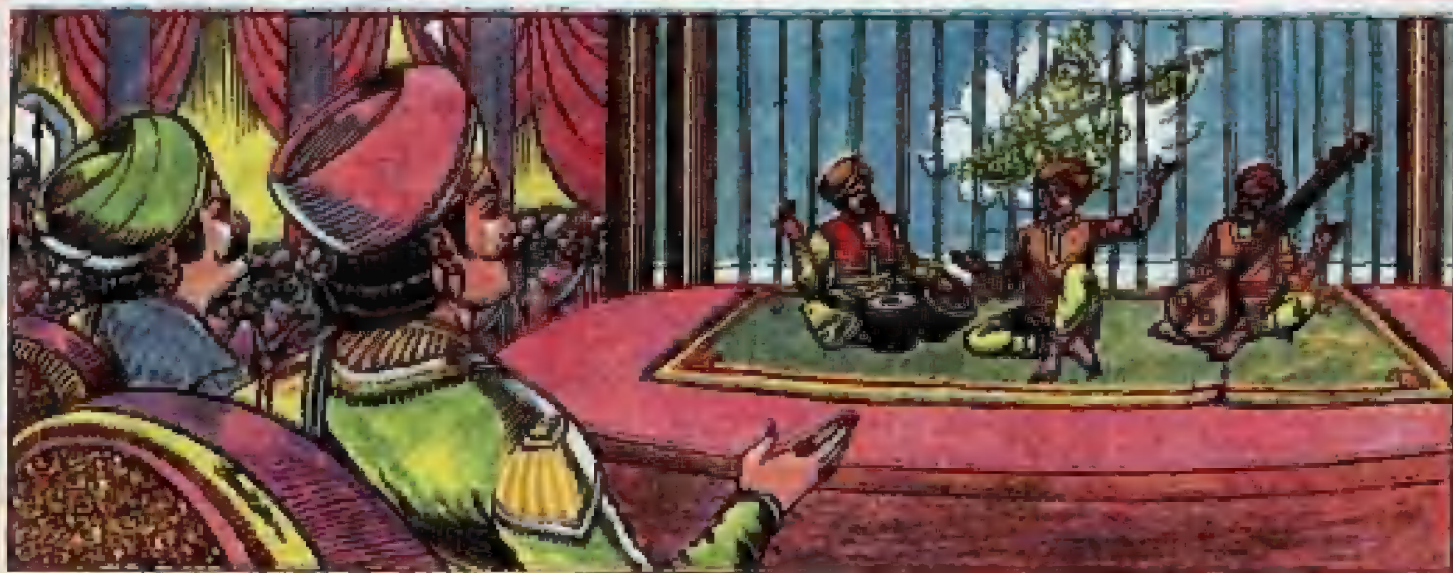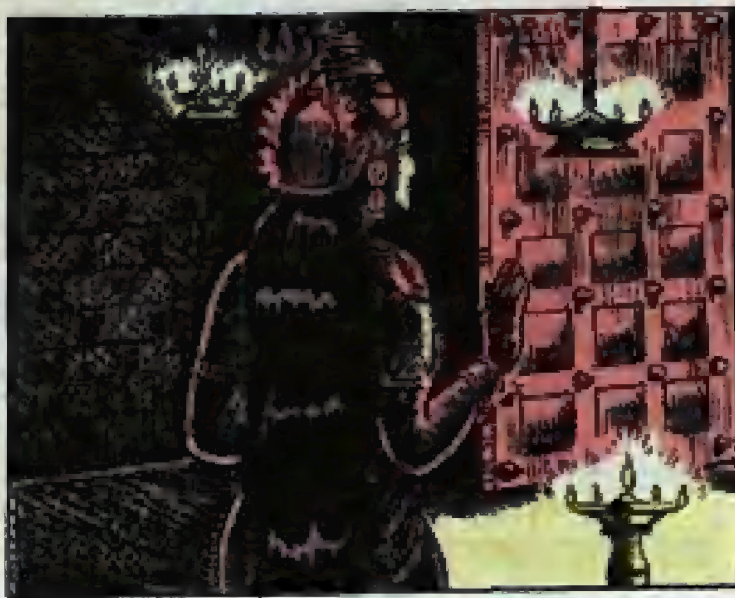
वरदात्री देवी

दुर्गापुर नामक गाँव में कालीदेवी का एक मन्दिर था। गाँव की सारी जनता कालीदेवी को अत्यन्त महिमा-सम्पन्न मानकर भक्ति और श्रद्धा पूर्वक उसकी पूजा-अर्चा करती थी। भक्तों की मनौतियों के अनुसार कालीदेवी भी उनकी इच्छायें पूरी करती थी। उस गाँव के किसान अपने खेतों में काम करने जाते वक्त अपनी फ़सल की रक्षा करने का निवेदन करके भक्तिपूर्वक उसको प्रणाम करते थे। हर साल मेले के समय अपनी अपनी आमदनी के अनुसार मंदिर में रखे बक्से में धन डाल देते थे।

एक वर्ष सूरजसिंह नामक एक खाद का व्यापारी उस गाँव में बसने आया। कालीदेवी की महिमा के बारे में उसने पहले ही सुन रखा था। इसलिए मंदिर में जाकर उसने प्रार्थना की, "माई, मैं तुम्हारे इस गाँव में व्यापार करने आया हूँ। मेरे खाद का इस गाँव के खेतों में ज्यादा प्रयोग होने लायक कुछ कर दो, तो अगले मेले में मैं तुम्हें चाँदी की खोल समर्पित करूँगा।" इस प्रकार मनौती कर वह अपने व्यापार में लग गया।

उसकी प्रार्थना सुनकर काली ने उसकी मदद करने का विचार किया। वैसे बिना खाद के ही प्रतिवर्ष उस गाँव के खेतों में काफी अच्छी फसल होती थी, मगर इस वर्ष फसल अच्छी न हुई। किसानों ने खेतों में खूब खाद डाल दी फिर भी फसल की हालत चिन्ताजनक रही। किसानों ने सोचा कि जमीन की उर्वरा शक्ति ही कम हो गयी है—और वे चिन्ता में डूब गये।

इस प्रकार किसानों की आमदनी कम हुई और सूरजसिंह की बढ़ गयी। अगले वर्ष रामप्यारे नामका और एक नया

बकुला देवी

व्यापारी उस गाँव में आ बसा। खेतों के लिए कीटाणु नाशक दवाइयाँ बेचने का उस का धन्धा था।

रामप्यारे ने भी काली की महिमा सुनी हुई थी। उसने मन्दिर में जाकर काली की विनयपूर्वक मिन्नत की, "माई, मेरी कृमिनाशक दवाइयाँ इस गाँव में ज्यादा बिक जायेंगी, तो मैं तुम्हें अगले मेले में सोने की करधनी बनाकर सौंप दूंगा।"

काली ने रामप्यारे पर अनुग्रह किया। परिणामस्वरूप उस वर्ष दुर्गापुर की फसलों में कीड़े लग गये। किसानों ने खादों के साथ भारी रकमें देकर कीटनाशक दवाइयाँ भी खरीद लीं। रामप्यारे ने प्रसन्नतापूर्वक कालीदेवी के लिये सुवर्ण करधनी बनवा कर दी। काली बहुत प्रसन्न हुई।

लेकिन एक सप्ताह बाद एक रात वेणुमाधव नामक एक किसान अपनी बीबी-बच्चों के साथ गाँव छोड़कर जाते हुए दिखाई दिया। गाँव के अन्य किसानों के जैसा वेणुमाधव भी काली-भक्त था।

कालीदेवी ने उस किसान के गाँव छोड़कर जाने का कारण जानना चाहा और वह एक बूढ़ी का रूप धर कर किसान की बैलगाड़ी के सामने खड़ी हो गयी। उसने पूछा, "इस गहरी रात के वक्त बीबी-बच्चों को साथ लेकर कहाँ जा रहे हो बेटा?"

"मैं शहर में मजदूरी करने जा रहा हूँ माँ! खेतीबाड़ी में क्या रखा है? दिन ब दिन नुकसान ही होता जा रहा है। मैं अपना खेत बेचकर इस गाँव को छोड़कर चला जा रहा हूँ।" वेणुमाधव ने जवाब दिया।

यह बात सुनकर देवी को थोड़ा क्लेश हुआ जरूर; मगर अपनी करधनी को देख वह मौन रह गयी। इसके बाद क्रमशः गाँव छोड़कर जानेवाले परिवारों की संख्या बढ़ती गयी। महीना पूरा होते होते आधा गाँव खाली हो गया। साथ ही कालीदेवी को प्रणाम करने आनेवालों की संख्या भी घटती रही। फिर भी कालीदेवी अपने

आप में संतुष्ट थी। लेकिन एक दिन सूरजसिंह और रामप्यारे भी उस गाँव को छोड़ कर जाते हुए दिखाई दिये, तब देवी विस्मय में आ गयी और उनके सामने जा पहुँची।

सूरजसिंह और रामप्यारे देवी से बोले, "देवी, तुम तो जानती ही हो हम कौन हैं। इस गाँव में हमारा व्यापार ठीक नहीं चल रहा है; इसलिये हम किसी दूसरे गाँव में जा बसेंगे।"

यह उत्तर सुनकर कालीदेवी एकदम गुस्से में आ गयी और अपने निज रूप में प्रत्यक्ष होकर बोली, "अरे दुष्टों, झूठ बोलने में तुम्हें शर्म नहीं आती? जमीन की उर्वरा-शक्ति घटने और फसलों में कीड़े लगने आदि विपदाएँ मैं ने तुम लोगों के हित के लिये ही पैदा की थीं।"

इसपर सूरजसिंह और रामप्यारे ने भक्तिपूर्वक झुककर देवी को प्रणाम किया और कहा, "माईजी, आपका कहना तो सच है; लेकिन हमारे प्रति आपको जो प्रेम उमड़ आया, उसके वशीभूत होकर आप ने गाँव के साधारण किसानों के प्रति उपेक्षा दिखायी। ये सब खेतीबाड़ी में घाटे का शिकार होते जा रहे हैं। अब हम अपनी खाद व दवाइयाँ बेचें भी तो किनको? इसलिए अब हम पड़ोस के गाँव की विन्ध्यादेवी के मन्दिर में जाकर उस माता को प्रणाम करके वहीं बसने जा रहे हैं।"

भारी मनौतियों के प्रलोभन में आकर उसने गाँव को कैसा नुकसान पहुँचाया है, यह बात तब जाकर कालीदेवी समझ गयी। उसके वर इस प्रकार अकारथ हो जायेंगे, इसकी कल्पना ही कालीदेवी ने नहीं की थी।

इसके बाद वह परिताप से भर उठी। फिर खेतों में पूर्ववत उर्वरा शक्ति उसने पैदा कर दी और कीटाणुओं से होनेवाली बीमारियों से फसलों को बचाया। क्रमशः गाँव छोड़कर गये हुए प्रायः सभी लोग धीरे धीरे फिर उस गाँव को लौट आये। अब वरदात्री देवी का मन्दिर पूर्ववत् आने-जाने वाले भक्तों से शोभायमान हो उठा।

१३

[देवी से वरदान प्राप्त कर मुनि के आदेशानुसार जयराज ज्ञानभूमी से होते हुए सोने की घाटी राज्य में पहुँचा। अपनी उँगली से अँगूठी निकालकर उसने सोने की प्रतिमा की उँगली पर चढ़ा दी। इससे उस प्रतिमा में प्राण-प्रतिष्ठा हुई और जयराज के पास आकर उसने कहा कि अब उन दोनों का विवाह संपन्न हुआ है। जयराज इसपर बहुत आनंदित हुआ।]

थोड़ी देर मौन रहकर जयराज ने कहा, "मानवों की दुनिया के उस पार मैं ने एक युवरानी को देखा। तुम तो बिलकुल उसी के जैसी लगती हो। मुझे अपनी आँखों पर विश्वास नहीं हो रहा है। तुम्हारी और उसकी शक्ल-सूरत बिलकुल मिलती-जुलती है। तुम यहाँ कैसे पहुँच गई ?"

"तुम उसी युवरानी की बात कर रहे हो, जिसको तुम ने गाना सिखाया और वह तुम्हारे देखते देखते ही आँखों से ओझल हो गयी ? उसने तुम से थोड़ा संगीत तो सुन लिया। पर गाने के कारण वह अधिक समय तक वहाँ ठहर न सकी।" युवरानी ने पूछा।

"हाँ, हाँ ! मगर तुम्हें वह बात कैसे मालूम हुई ?" जयराज ने आश्चर्य से पूछा।

"निर्जीव प्रतिमा में जो प्राण संचार हुआ वह प्राण तो किसी और स्थान से आया होगा न ? तुम ने जिस युवरानी को देखा था, उसी के प्राण अब

मनोज दास

मेरे भीतर है ।" युवरानी ने कहा ।

"ओह ! ऐसी बात ?" आल्हादित होकर जयराज ने कहा ।

अपने हाथ का कमलपुष्प जयराज की ओर बढ़ाते हुए युवरानी ने कहा, "अगर तुम इस कमल को सूँघ लो, तो तुम्हें अपना निजी स्वरूप दिखाई देगा । घबराओ नहीं, सूँघ कर तो देखो । फिर तुम्हें इस फूल का अद्‌भुत प्रभाव मालूम होगा ।"

जयराज ने वह फूल सूँघ लिया । दूसरे ही पल पहाड़ पर स्थित राजमहल में स्वर्ण प्रतिमा को गढ़नेवाले एक राजपुत्र का दृश्य जयराज के मनोनेत्रों के सामने उभर आया । भूतकालीन स्मृतियाँ ताज़ा हो उठीं और जयराज को अब स्पष्ट मालूम हुआ कि, उसी ने वह स्वर्णप्रतिमा गढ़ ली थी !

"अब हमारा यहाँ पर ज़्यादा देर रहना हितकर नहीं है । राजा का स्वांग रचनेवाला दुष्ट मान्त्रिक जो अन्याय ढा रहा है उससे तुम अनभिज्ञ हो । राजा लालची है और मेरे साथ विवाह करने के प्रलोभन में आकर मेरी प्रतिमा में प्राणसंचार करवाने के लिये अनेक यातनाएँ झेल रहा है । अभी वह गुफ़ा के अन्दर बंद रहा है । भूखा रह कर अपने दिन गुज़ार रहा है । शायद पहनने को वस्त्र भी नहीं । प्रतीक्षा कर रहा है कि कौन कब उसे गुफ़ा से बाहर निकालेगा ? मगर उस दुष्ट मान्त्रिक ने स्वर्णप्रतिमा को उखाड़कर उस का सोना गलवाने की योजना बनायी है । उसके सेवक अभी थोड़ी ही देर में यहाँ पहुँच जायेंगे ।" युवरानी ने जयराज को जानकारी दी ।

इसके बाद जयराज और युवरानी पहाड़ की ऊँची चोटी पर पहुँचे । उसी वक़्त पूर्व दिशा में अंधकार को चीरते हुए सूर्य का उदय हो रहा था । सुनहरे प्रकाश से पूर्व की ओर सुवर्ण-सागर-सा फैल गया था । धीरे धीरे संपूर्ण सूर्य क्षितिज पर सोने की बड़ी गेंद के समान चमकने लगा । सारी प्रकृति उसके सुनहरे प्रकाश में उजली हो उठी । सर्वत्र एक नव-जीवन का संचार हुआ ।

"ओह, यह पृथ्वी कितनी सुन्दर है !" युवरानी ने कहा ।

"ऐसी बात है ?" जयराज और कुछ बोलने जा रहा था, कि इतने में पहाड़ के नीचे कुछ

कोलाहल शुरू हुआ ।

दोनों ने उस तरफ़ दृष्टि दौड़ायी ।

राजभट आपस में तर्क वितर्क कर रहे थे— "अरे, यह क्या ! स्वर्णप्रतिमा कहाँ गायब हुई ?" प्रतिमा वहाँ से गायब देखकर भूखे भेड़ियों की भाँति वे इधर उधर घूमने लगे । स्वर्ण-प्रतिमा के बारे में सब को बड़ी चिन्ता हुई । सब उसे ढूँढ़ते हुए अलग अलग दिशाओं में भाग-दौड़ करने लगे । पर किसी को भी सुवर्ण-प्रतिमा का पता न चला ।

थोड़ी देर बाद राजा का वेष किया हुआ मान्त्रिक लम्बे डग भरते हुए वहाँ आ पहुँचा । वह असहनीय विषाद और क्रोध से जैसा पागल हो गया और चिल्लाया, "मैं सभी सेवकों का वध कर डालूँगा । कहाँ गई वह सुवर्ण-प्रतिमा ? ज़रूर किसी ने चुरा ली होगी । अभी मैं असली चोर का पता लगाऊँगा । ऐसे चोर कहीं जा नहीं सकता ! चलो, तुम दूर हटो सब । निकम्मे कहीं के !"

राजभटों की ओर देखते हुए थोड़ी देर तक हुँकार भरता हुआ वह खड़ा रहा और बाद में उसने अपनी दृष्टि वास्तविक राजा को बन्द कर रखी हुई गुफ़ा की ओर दौड़ायी । वह यह बात अब तक भूल सा गया था कि उसीने धोखे से राजा को बन्दी बनाया है और अभी तक यह समाचार किसीको मालूम भी नहीं है । जोश में आकर वह चिल्लाया, "हाँ, हाँ, वही ! उस दुष्ट राजा ने ही सुवर्णप्रतिमा चुरायी होगी ।"

उस की ये बातें सुनकर वहाँ आये हुए मन्त्री और महाज्ञानी विस्मय में आ गये ।

आगे कूद पड़ा और उस ने मान्त्रिक की कमर में लटकनेवाले म्यान से तलवार खींच ली। विकट अट्टहास करते हुए उस ने मान्त्रिक का सिर काट डाला।

यह देख राजा के वेषधारी मान्त्रिक के अंगरक्षक राजा की ओर बढ़े; मगर असली राजा की आवाज़ सुनकर वे जड़वत् खड़े खड़े रह गये!

राजा ने अब मन्त्री और महाज्ञानियों को उनके नाम से पुकार और आदेश दिया, "तुम लोग तुरन्त अपने अपने घर जाकर मेरे लिये रुचिकर पदार्थ ले आओ। मैं कई दिनों का भूखा हूँ। इस दुष्ट मांत्रिक ने मेरी क्या दुर्दशा की। भाग्य की बात है कि अब तक मैं ज़िंदा रह सका। और कुछ दिन यों ही जाते तो मेरी लाश ही बाहर निकलती।"

इसके बाद मान्त्रिक राजभटों को साथ लेकर गुफ़ा के भीतर चला गया और उसने वहाँ की दीवार को तोड़ने का आदेश उन भटों को दिया।

भटों ने कुछ ही मिनटों में दीवार तोड़ डाली और उस की दूसरी बाजू में रखे राजा को बाहर ले आये।

राजा बहुत ही दुर्बल हो, दाढ़ी बढ़ाये भूत जैसा लग रहा था। कई दिन राजा को खाना नहीं मिला था, न पीने को पानी। जिस मान्त्रिक ने उसका यह हाल बनाया था, उससे प्रतिशोध लेने की बात उसके मन में निरन्तर बनी रही। मान्त्रिक के दर्शन होते ही उसका खून चूसने की इच्छा उसे हो रही थी। मगर गुफ़ा में बन्द अभी तक वह कुछ कर न सका था। वह एक ही छलांग में

राजा की आवाज़ और उस की मानसिक स्थिति के आधार पर कर्मचारी और मन्त्रियों ने भी उसे अपने असली राजा के रूप में पहचान लिया।

अब सामने पड़ी खून से लथपथ मान्त्रिक की लाश पर हर एक व्यक्ति लात मारने लगा। इस प्रकार लात मारने के लिये सब को कतार में भेजते भेजते मन्त्री परेशान हो गया।

"अरे मूर्खों, अब निरर्थक ही इस दुष्ट की लाश पर लात मारने से तुम्हारे हाथ क्या लग जाएगा? इससे अच्छा होगा, सुवर्ण पर लात मारो।" राजा चिल्लाया।

यह सुनकर सब विस्मय से राजा की ओर

देखने लगे। "स्वर्णप्रतिमा की वेदी के नीचे जो चट्टान है, उसके नीचे सुवर्णद्रव से भरा विशाल तड़ाग है। इस गुफा में बन्दी रहते वक्त सुरंग में से मैं ने उस तड़ाग को देखा है। आओ, इसे खोद डालो। लेकिन एक बात याद रखो, उस तड़ाग का सारा सोना मेरा ही होगा। चाहे तो कुछ दिन बाद तुम लोगों को एक एक कलछी-भर दे सकता हूँ। अरे, तुम लोग मुँह बायें देखते क्या हो ? मूर्खों, खोदना तो शुरू करो। और पहले कुछ लोग जाकर मेरे लिये लड्डू ले आओ।"

इस के पहले जो राजभट स्वर्णप्रतिमा को उखाड़ने के लिये कुदाल-फावड़े लेकर उत्साह के साथ आये थे, वे ही अब वेदी के नीचे स्थित चट्टान को तोड़ने, उसी उत्साह से आगे बढ़े।

उन्होंने पहली कुदाल चलायी और अचानक वज्रपात जैसी ध्वनि सुनायी दी। वे जिस चट्टान को तोड़ना चाहते थे, वह चट्टान ही एक नक्षत्र की भाँती तेज़ी से आकाश में उड़ा और बादलों के बीच पहुँच कर हज़ारों टुकड़ों के रूप में टूट गया। उस चट्टान के स्थान से एक फव्वारा उमड़ आया और अमित वेग से सुवर्णद्रव ऊर्ध्वमुखी होकर छितर गया। इसे देख वहाँ पर उपस्थित सब लोग भय और संभ्रम से चिल्ला उठे। थोड़ी ही देर में स्वर्णद्रव उस सारे प्रदेश में फैलने लगा। वह द्रव खौल रहा था; उस के स्पर्शमात्र से राजभट छटपटा कर वहीं दम तोड़ बैठे।

राजा, मन्त्री तथा महाज्ञानी भयभीत होकर वहाँ से हटने की पूरी कोशिश करने लगे। परन्तु पल पर पल फव्वारे की गति तेज़ होती गयी और उसके प्रवाह में बाढ़ सी आ गयी। इससे वे भी सब के सब खौलनेवाले उस द्रव में डूब गये।

भयानक लगनेवाले उस द्रव को मैदानों की ओर बढ़ते देख पहाड़ की तलहटी में बसी जनता भयकंपित हो उठी। जान हथेली पर लेकर चीखते चिल्लाते वे सब अन्दाधुन्द भागने लगे। फिर भी उस स्वर्णद्रव की चपेट में आने से कोई भी अपने को बचा नहीं पाया!

दुपहर तक वह स्वर्णद्रव वाला पदार्थ प्रलयंकर स्वरूप में फैलता रहा और इसके बाद धीरे-धीरे उस की धारा रुक गयी। चारों तरफ़ भयानक नीरवता छायी हुई थी। पक्षी भी आवाज़ करने का साहस नहीं कर पा रहे थे।

"सोने की घाटीवाला प्रदेश अब पूर्ण रूप से निर्जन हो गया है ।" युवरानी निराशाभरी आवाज़ में बोल उठी ।

"तुम ने थोड़ी ही देर पहले कहा था न— "यह पृथ्वी अत्यंत सुन्दर और शोभायमान है ! फिर भी देखो, मानव कैसा अभागा है ! वह स्वयं ही पृथ्वी को अपने निवास योग्य होने से अनुपयोगी बनाता है ।" गहरी साँस लेकर जयराज ने कहा ।

इस के थोड़ी देर बाद युवरानी ने जयराज से पूछा, "फिलहाल हमारा कर्तव्य क्या है, हमें कहाँ जाना है, क्या करना है ?"

"यहीं रहकर प्रार्थना करेंगे । हमारी प्रार्थना सफल होगी । उन के नये जीवन के शुभारंभ में हम अपना सहयोग देंगे ।" जयराज ने उत्तर में कहा ।

"लो, देखो ! सुवर्ण जल चट्टानों में परिवर्तित होने लगा है ।" युवरानी ने उँगली उठाकर दिखाते हुए कहा ।

"बदलने दो, फिर वह सोना ही बनेगा । मनुष्यों का हृदय जब सुवर्ण जैसा बनेगा तब वे चट्टान भी सोना बन जायेंगे । वह देखो, उस छोटे से सरोवर में केवल कीचड़ है; फिर भी सूरज की रोशनी के प्रभाव से उस कीचड़ में सुन्दर कमल खिल उठे हैं । जब प्रकृति के अन्दर ऐसा अद्भुत परिवर्तन संभव है, तो भगवान की कृपा से मनुष्य के भीतर सच्ची मानवता का महान परिवर्तन क्यों

नहीं हो सकता ? यह संसार विकास की एक परंपरा है । आज मानव बहुत प्रगति कर चुका है । प्रगति का यही दौर चलता रहेगा तो एक अतिविकासित मनुष्य यहाँ एक दिन ज़रूर आएगा ।" जयराज ने आशाभरी आवाज़ में पूछा।

"अवश्य होगा । मनुष्य में सच्ची मानवता अवश्यंभावी है । हम सब उसकी प्रतीक्षा करते रहें ।" युवरानी ने हामी भरी ।

इसके बाद दोनों ने एक दूसरे की ओर देखकर मन्दहास किया । उन की हँसी में विश्वास की रेखाएँ प्रस्फुटित हुईं । (समाप्त)

कानून और इन्साफ़

किसी राज्य की प्रजा कपड़े पहनने में अनुचित स्वतंत्रता का उपभोग करने लगी। यह देख कर राजा ने एक कठोर कानून बनाया कि सब को ऐसे कपड़े पहनने चाहिए जो सारा शरीर ढाक दें।

एक दिन राज-सेवकों ने तीन व्यक्तियों को बंदी बनाकर राजा के सामने पेश किया। उनमें से एक जंगली था जो केवल लंगोटी पहने था। दूसरा एक सामान्य आदमी था, जिसका आधा शरीर ढँका था। तीसरा व्यक्ति एक नंगा योगी था।

राजा के पीछे मंत्री खड़ा था। उसने जंगली को अनिवार्य प्रौढ़-विद्यालय में भर्ती करने का आदेश दिया। साधारण आदमी को दस कोड़े लगाने की सज़ा सुनाई। और योगी को एक शाल ओढ़ाकर रवाना कर दिया।

मंत्री के ये फ़ैसले देखकर राजा को बड़ा विस्मय हुआ। उसने मंत्री से पूछा— "अलग अलग व्यक्तियों से यह अलग अलग व्यवहार भला क्यों?"

मंत्री ने नम्रता के साथ निवेदन किया— "महाराज, यह बात ठीक इन कि तीनों ने कानून का उल्लंघन किया है। पर पहला व्यक्ति उजड्ड जंगली ठहरा, हमें उसमें सुधार लानेकी आवश्यकता है। दूसरा साधारण स्तर का आदमी है, इस लिए उसे दण्ड देकर सही मार्ग पर लाना ज़रूरी है। योगी ने कानून का उल्लंघन किया ज़रूर, पर वह कानून के अतीत संप्रदायवाला है। कानून के तहत हम उसे बन्दी नहीं बना सकते।"

मंत्री का विवरण सुनकर राजा समझ गया कि कानून और इन्साफ़ के बीच अंतर है।

साँप और मनुष्य

दृढ़व्रती विक्रमार्क पेड़ के पास लौट आये, पेड़ पर से शव उतारा, उसे कंधे पर डालकर सदा की भाँति चुपचाप श्मशान की ओर चलने लगे। शव में वास करनेवाले बेताल ने बीच रास्ते पूछा, "राजन्, यह चराचर जगत् परस्पर-विरोधी स्वभाव और बुद्धिवाले प्राणियों का आवास है। उनका जीवन-संघर्ष विभिन्न प्रकार के वैषम्यों और धोखाधड़ियों से चलता रहता है। इस सत्य से आप परिचित हैं तो कोई बात नहीं, अन्यथा आप के ये सारे श्रम और कष्ट व्यर्थ सिद्ध होंगे। मेरे इस कथन के पुष्ट्यर्थ मैं सिद्धेन्द्र नामक साधु की कहानी आप को सुनाता हूँ। इससे आपका मनोरंजन होगा। आप अपने परिश्रम के कष्टों को भूल जाएँगे। ध्यान से सुन लीजिए।"

बेताल कहानी सुनाने लगा:—

विन्धयाचल की गुफ़ाओं में सिद्धेश्वर नाम का एक साधु तपस्या करता था। थोड़े समय के बाद उसे यह एहसास हुआ कि उसे दिव्य ज्ञान

बेताल कथा

प्राप्त हो गया है। उस ज्ञान को जगत् में बाँटने का सच्चा संकल्प लेकर सिद्धेन्द्र जन-समूह के बीच चला गया।

मार्ग में एक उजड़े कुएँ के भीतर से उसे किसी का करुण क्रन्दन सुनाई दिया। कुएँ के समीप जाकर साधु ने अन्दर झाँककर देखा। अपने तेज से आँखों को चकाचौंध करनेवाला एक नागसर्प उसे दिखाई दिया। पहले तो वह कुछ डर गया। फिर साहस करके उसने दुबारा कुएँ में देखा और नागसर्प की ओर बारीकी से देखने लगा। धीरे धीरे उसका डर जाता रहा।

साधु को देखते ही अपना फन उठाकर सर्प ने उसे बचाने की प्रार्थना की। मनुष्य की बोली में बात करनेवाले उस सर्प को देख साधु को बड़ा आश्चर्य हुआ। वह सोचता रहा—इस की प्रार्थना स्वीकार करे या नहीं। अगर इसको बचाना भी चाहा तो क्या करना चाहिए? थोड़ी देर विचार करने के बाद उसको एक उपाय सूझा। वह एक तालाब के पास गया और उस में से कुछ कमल-नाल उखाड़कर उसने उन्हें एक दूसरे से बाँधकर उसकी मदद से सर्प को कुएँ से बाहर निकाला।

सात्विकी नाम के उस सर्प ने साधु को अपनी विपदा सुनायी, "महानुभाव, पाताल के सुरंगों में निवास करनेवाले हम नाग सर्पों की जब-तब पृथ्वीपर आकर विहार करने की परिपाटी है। इधर कुछ समय पूर्व शुभ्र ज्योत्सना के प्रकाश में यहीं समीप के केतकी वन में मैं अपने बच्चों को साथ लेकर विहार कर रहा था। अचानक वहाँ से गुज़रने वाले एक मनुष्य ने मेरी पूँछ पर कदम रखा। मैं फुत्कार कर तत्काल उसे डसने ही वाला था कि उस आदमी ने दोनों हाथ जोड़कर मुझे नमस्कार किया। उसने कहा—"सर्पराज, मुझे क्षमा करें। मैंने जानबूझ कर आपकी पूँछ पर पाँव नहीं रखा। मैं अपनी ग़लती के लिए आपसे क्षमा याचना करता हूँ। क्या आप मुझ पर दया नहीं करेंगे?"

उस पर दया कर मैं अपनी राह आगे बढ़ने को हुआ, तब उसने मेरा रास्ता रोक कर मुझ से निवेदन किया कि मैं उसका आतिथ्य स्वीकार कर लूँ। जिस पर मैंने दया की, उसका आतिथ्य ग्रहण करने में मुझे संकोच नहीं हुआ। वैसे मुझे और

बच्चों को भूख भी लगी थी। इस लिए उसकी प्रार्थना को मैंने स्वीकार किया। इस के बाद वह एक घड़ाभर दूध ले आया। मैंने और मेरे बच्चों ने वह दूध पी लिया। दूध बड़ा ही स्वादिष्ट था। उसने दूध में जो कुछ मिलाया था, उससे वह अधिक स्वादवाला बना था। हम सब ने पेट भर कर दूध पी लिया। पर आश्चर्य—दूसरे ही क्षण मैं नशे में आ गया। बेहोशी के छूटते ही मैं ने अपने को इस कुएँ में पाया। मैं ऊपर देख नहीं पा रहा हूँ। और मेरे बच्चे मेरे पास दिखाई नहीं देते। आतिथ्य के बहाने ज़रूर कोई चाल चली गई है। वह दुष्ट ज़रूर मेरे बच्चों को पकड़कर ले गया है।"

सर्प की बातें सुनकर सिद्धेन्द्र ने अपनी दिव्य दृष्टि से उस दुष्ट का पता लगाने की कोशिश की; तो उसे पता चला कि उस गाँव की सीमा पर बसनेवाले महेन्द्र नामक सँपेरे की यह करतूत है। अब साधु ने सर्प को समझाया, "तुम चिन्ता न करो। मैं तुम्हें न्याय दिलवाऊँगा, तुम अपने बिल में चले जाओ।" इतना कहकर साधु सीधे महेन्द्र के घर पहुँचा। सर्प के मुँह से सुना वृत्तान्त उसे सुनाकर साधु ने पूछा, "तुम ने ऐसा विश्वासघात क्यों किया?"

महेन्द्र ने बड़े विनयपूर्वक उत्तर दिया, "महानुभाव, साँपों को पकड़ना मेरा पेशा है। फिर भी बड़े सर्प ने मुझे काटा नहीं इसलिये मैं ने उसे छोड़ दिया। उसके बच्चे मेरे पास सुरक्षित हैं। उनका ज़हर निचोड़कर उसे बेचकर अपना पेट पालना मैं ने चाहा था। लेकिन आप के प्रति मुझे श्रद्धा है; उससे प्रेरित हो, मैं उन्हें आप के सामने लाकर छोड़ दूँगा। यह कार्य मैं अपने हाथों से ही करूँगा।"

महेन्द्र की बातों से साधु संतुष्ट हुआ और उसे अपने साथ सात्विकी के बिल के पास ले गया। महेन्द्र में हुए इस परिवर्तन से खुश होकर सात्विकी ने अपने मस्तक पर सुशोभित मणि निकालकर उसे भेंट किया और साधु के उपकार के प्रति उसने अपनी कृतज्ञता प्रकट की।

इसके बाद सिद्धेन्द्र वहाँ से चल पड़ा और अनेक गाँवों में संचार करते हुए वह जनता को नेक नसीहत देने लगा। फिर कुछ समय बाद उसी रास्ते से गुज़रते हुए वह सात्विकी को मिलने गया। मगर इस बार उसे सात्विकी बहुत ही

चिन्ताग्रस्त और निर्बल दिखाई दिया ।

सिद्धेंद्र ने सर्प को चिन्ता का कारण पूछा । उसने अपना वृत्तान्त सुनाया ।

नागमणि ले जाने के बाद दूसरे ही दिन महेन्द्र सात्विकी के पास पहुँचा और उसने कहा कि आइन्दा वह साँप नहीं पकड़ेगा । सिद्धेंद्र की भाँति वह भी सच्चे पथ पर चलेगा । महेन्द्र के वस्त्रप्रावरणों में भी परिवर्तन था । यह देख सात्विकी ने उसकी बातोंपर विश्वास किया । उस दिन से महेन्द्र अक्सर सात्विकी और अन्य सर्पों की बांबियों के पास आता-जाता रहा ।

एक रात महेन्द्र उन बांबियों में बसनेवाले सर्पों को चाँदनी में विहार कराने के लिये उस केतकी-वन में ले गया । जब वे सब सर्प चाँदनी में स्वच्छन्द विचरने लगे तब उसने अपनी पूर्व योजना के अनुसार केतकी-वन के चारों तरफ़ आग लगा दी और सर्पों के साथ उस जगह को उसने राख के ढेर में परिवर्तित कर दिया ।

आग ठंड़ी होनेपर महेन्द्र ने ढूँढ ढूँढकर सर्पमणि इकट्ठा किये और उनको बेचकर वह लखपति बन बैठा । आग की लपटों से किसी प्रकार बचकर अकेला सात्विकी ही अपनी बांबी को लौट पाया । लेकिन वह इस व्यथा से दिन-ब-दिन दुर्बल होता गया कि वही उसकी जाति के सर्वनाश का कारण बन गया है ।

यह सारा समाचार सुनकर सिद्धेंद्र क्रोध में आ गया और वह सीधे महेन्द्र के घर पहुँचा । उस समय महेन्द्र अपने मकान के सामने निर्मित मन्दिर में एक विशाल नाग-प्रतिमा की पूजा कर रहा था ।

साधू ने उसके समीप जाकर उसे ललकारा, "दुष्ट, तुमने विश्वास दिलाकर अनेक सर्पों का नाश किया है; अब नाग-पूजा का यह स्वांग क्यों ?"

साधु को देख हाथ जोड़कर महेन्द्र बड़ी ही विनम्रता से बोलने लगा, "स्वामीजी, इस में मेरा क्या दोष ? उपकारी के प्रति मैं ने भी प्रथम बार उपकार ही किया । लेकिन मैं ने आप को यह वचन कभी भी नहीं दिया, कि उपकार करनेवालों के प्रति मैं उपकार ही करूँगा । मनुष्य सर्पों की पूजा करते हैं, फिर भी उनसे इस कारण डरते हैं, कि वे विषैले प्राणी हैं । मनुष्य भले ही उनकी पूजा

करें, मगर सर्प मनुष्यों पर विश्वास नहीं करते। वे भी जानते हैं, कि मनुष्य उनसे कहीं ज्यादा बुद्धिमान हैं। ऐसी हालत में आप ही बताइये, कि इन सर्पों का मुझ जैसे मनुष्य पर विश्वास करना, यह किसका दोष है ?"

यह सब सुनकर सिद्धेंद्र अत्यंत कुपित होकर बोला, "तुमने दया गुण का बिस्मरण करके भोले सर्पों को मार डाला, इसलिये तुम भी एक सर्प बनकर पडे रहो।" मगर इस शापवाणी का महेन्द्र पर कोई असर नहीं हुआ। साधु को इस बात पर बड़ा ही विस्मय हुआ; सिर झुकाकर वह वहाँ से चला गया।

यह कहानी सुनाकर बेताल ने पूछा, "राजन्, इतने तपोसंपन्न सिद्धेंद्र योगी का शाप व्यर्थ क्यों हो गया ? क्या न्याय व धर्म महेन्द्र के पक्ष में थे ? इस संदेह का समाधान जानकर भी नहीं बताओगे तो तुम्हारा सिर फूटकर टुकड़े टुकड़े हो जाएगा।"

विक्रमार्क ने इसका उत्तर दिया, "साधु के शाप के व्यर्थ हो जाने का एक खास कारण है। प्राणियों का स्वभाव प्राकृतिक धर्म जैसा होता है। उस पर नियन्त्रण कर, कोई भी शक्ति उसे बदल नहीं सकती। इतना तपोसम्पन्न साधु भी इस तथ्य को समझ नहीं पाया। सर्प तथा मनुष्य के बीच सह-जीवन संभव नहीं है — इस बात को महेन्द्र ने अपने शब्दों में समझाने की कोशिश की, फिर भी साधु क्रोध के कारण उस रहस्य को समझ नहीं पाया। बिच्छू की पूँछ में, सर्प के सिर में विष फैला होता है — इस बात को विद्वानों ने खूब पहले ही उद्घोषित किया है। यह बात महेन्द्र के तहत सौ प्रतिशत सत्य है। सिद्धेंद्र को इस बात को जानना जरूरी था। पर इस ज्ञान के अभाव में उसने वह काम किया जो उसे नहीं करना चाहिए था। ऐसे व्यक्ति को साधु सिद्धेंद्र ही सर्पों के बांबियों के पास ले गया और उनके विनाश का कारण बन बैठा। इन्हीं करणों से उनका शाप व्यर्थ हो गया।"

यह कहकर राजा के मौन होते ही वेताल शव के साथ अदृश्य हो पुनः वृक्ष पर जा बैठा।

(कल्पित)

स्वयं सेवक

किसी गाँव में जगन्नाथ नाम का एक गृहस्थ रहता था। उसने अपनी कन्या का विवाह पड़ोस के गाँव के एक बड़े ओहदेवाले व्यक्ति के साथ करा दिया। बड़े धूम-धाम से शादी हुई। जगन्नाथ ने शादी में पानी का-सा पैसा बहाया। इकलौती लड़की की शादी बड़े ठाठ से ही होनी चाहिए थी। उसने कुछ पैसा उधार भी लिया। फिर भी उसे उसका ग़म नहीं था। कुछ महीनों में उसने सारा पैसा वापस दिया और वह कर्ज़मुक्त हो गया।

जगन्नाथ की यह पुत्री प्रथम प्रसव के लिये अपने मायके पहुँची और उसने एक पुत्र को जन्म दिया। कुछ मास बीत गये और जगन्नाथ के जामात ने खबर भेज दी कि, अमुक दिन वह अपनी पत्नी व बच्चे को ले जाएगा।

वैसे जगन्नाथ कोई बड़ा धनाढ्य आदमी नहीं था। वह अपनी हैसियत के अनुरूप किसी बात की कमी महसूस हुए बिना अपना परिवार चलाता था। चूँकि उसका दामाद संपन्न परिवार का था, जगन्नाथ को लगा कि जब दामाद उस के घर आएगा, तब उस एक दिन के लिये ही सही-अपने घर में एक नौकर हो, तो अच्छा होगा।

जिस दिन जामात आने की खबर थी, उसी दिन सवेरे ही मिष्टान्न आदि बनाये जाने लगे। जगन्नाथ सुबह से नौकर की तलाश में आकर चक्कर काटता रहा। किसी ने कहा—"एक दिन कौन काम करेगा? कम से कम एक हफ़्ते भर काम हो तो आ सकता हूँ।" और किसीने कहा—"एक ही दिन काम हो तो भारी मजदूरी देनी पड़ेगी। और मैं आठ घंटे ही काम करूँगा। शाम को मैं घर चला जाऊँगा।" तीसरे ने कहा—"मैं काम पर आता हूँ। पर बर्तन माँजना और कपडे धोना मुझसे नहीं होगा। घर के

चन्दामामा में २५ वर्ष पहले प्रकाशित कहानी

आगेवाला आँगन मैं साफ नहीं करूँगा। कोई देखे तो बेइज़्ज़त न होना पड़े।" फिर घर लौटकर अपनी पत्नी से उसने कहा, "अरी, मेरी कोशिश तो व्यर्थ हो गयी। अब दामाद आने पर किसी चीज़ के लिये नौकर को बुलायें, और उस वक्त यहाँ कोई नौकर न रहें तो हमारी इज़्ज़त मिट्टी में मिल जाएगी न !"

पति-पत्नी में जब यह वार्तालाप हो रहा था, तब मिष्टान्नों की सुगंध से आकृष्ट हो, वहाँ ड्योढी पर खड़े एक भिखारी ने उनकी बातें सुन लीं। उसके मन में यह कल्पना जगी की यहाँ स्वादिष्ट भोजन के साथ मिठाइयाँ भी मिलने का मौका है। चलो, एक दिन नौकर का ही काम कर लें। एक दिन अच्छा स्वादिष्ट भोजन मिलेगा, और तंखा अलग ! वैसे भीख माँगकर भी क्या मिलता है। वही जूठन और बासी रोटियाँ ! आज इस घर में नौकर का काम करके तो देखें।

बरामदे में कोई नहीं था। भिखारी झट कुएँ की दिशा में गया। वहाँ रस्सी पर सुखाने के लिये लटकाए वस्त्रों में से एक पुराना वस्त्र और फटा कुर्ता उसने उठाया। अपने मैले कपड़े उतार कर उसने एक कोने में रखे। कपडे बदलकर और सिरपर एक तौलिया बाँधकर वह घर के सामने हाथ बाँधकर खड़ा हो गया।

ठीक उसी समय एक घोड़ा गाड़ी आकर उस मकान के सामने रुक गयी और उस में से जगन्नाथ का दामाद उतर पड़ा।

भिखारी ने लपक कर गाडी में से बक्सा उतारा और दामाद के पीछे वह घर के अन्दर गया।

गाडी रुकने की आहट पाकर जगन्नाथ बाहर
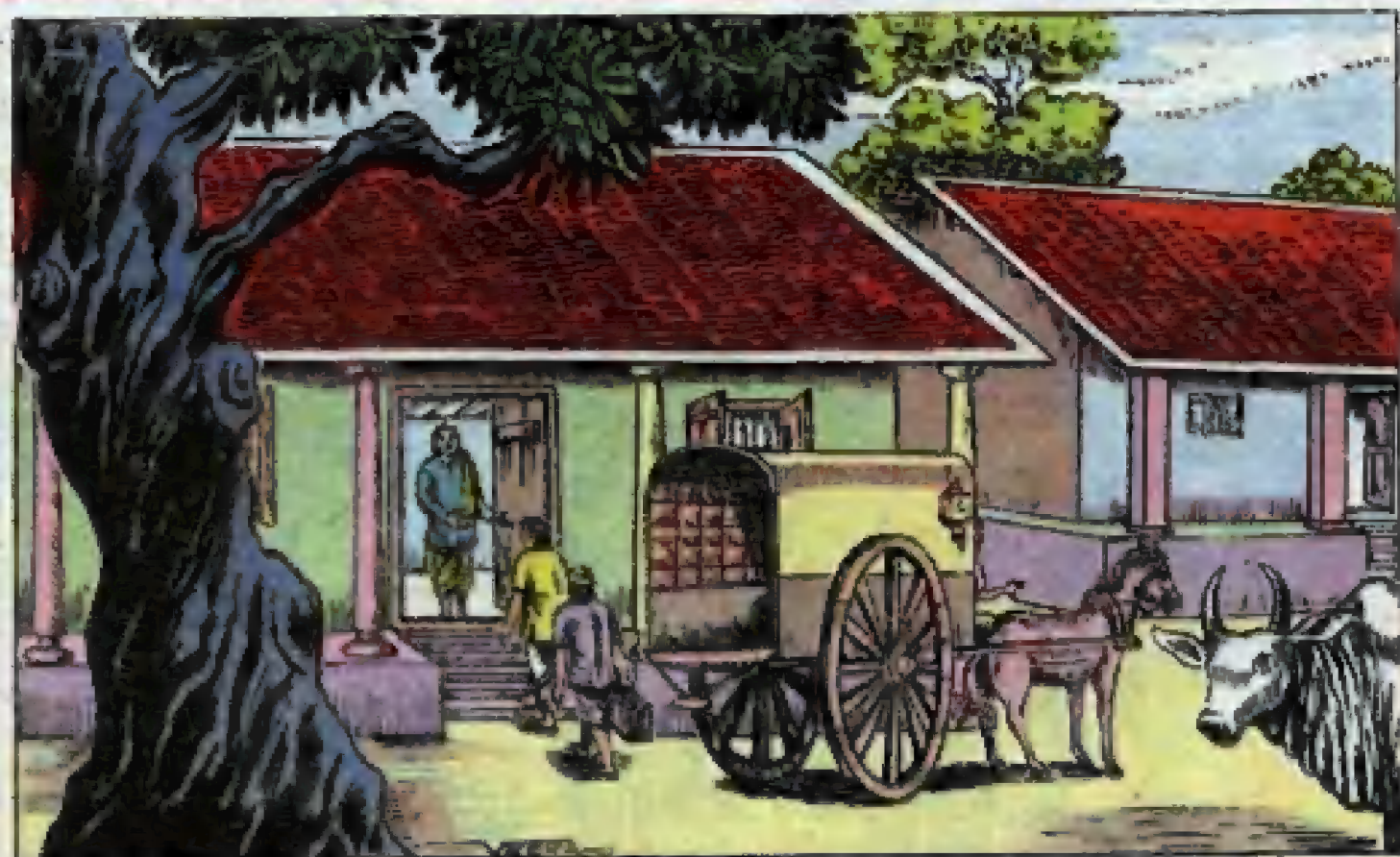
आया, दामाद से कुशल प्रश्न पूछकर उस का स्वागत किया और उसके पीछे आये नौकर को देख कर बहुत ही खुश हुआ ।

दामाद ने भिखारी को देखकर समझ लिया कि वह संभवतः ससुरजी के घर का नौकर है ।

दामाद का नौकर समझकर जगन्नाथ व उसकी पत्नी ने भिखारी को बरामदे में बिठाकर खाना परोस दिया । दावत का भोजन भरपेट खाकर भिखारी संतुष्ट हो गया ।

भोजन के बाद जगन्नाथ ने दामाद को नये वस्त्र भेंट किये । जगन्नाथ की पत्नी ने मिठाइयाँ बाँधकर भिखारी के हाथ सौंपते हुए कहा, "बेटा, उन्हें तुम अपनी बीबी-बच्चों को दे दो ।"

अपरान्ह तक विश्राम करके जगन्नाथ का दामाद अपनी बीबी व नूतन बच्चे के साथ अपने गाँव जाने के लिये तैयार हुआ, तो भिखारी एक किराये की गाड़ी तै करके ले आया । उसने सारा सामान गाड़ी में रख दिया । दामाद ने सब से आखिर में गाडी पर सवार होते हुए अपने ससुराल के नौकर के हाथ पर कुछ रुपये रखे ।

जब गाड़ी चल पड़ी तब जगन्नाथ की पुत्री ने अपने पति से पूछा, "आप तो नौकर को पैसे देकर भेज रहे हैं; क्या वह आप के साथ यहाँ नहीं आया ?"

"नहीं, मैंने सोचा कि यह तुम्हारे घर का नौकर है ।" जामाता ने उत्तर दिया ।

"अरे, मेरे माँ-बाप ने तो इसे आप का नौकर समझकर उसे मिठाइयाँ खिलायीं ।" पत्नी बोली । दोनों हँस पड़े ।

इधर जगन्नाथ की पत्नी ने पति से पूछा, "अजी, देखो तो, दामाद का नौकर उनके साथ गये बिना दूसरी ओर ही जा रहा है ! यह तो शायद उन का नौकर नहीं है ।"

"तब फिर वह कौन है ?" जगन्नाथ ने कहा । "यह तो दामाद का नौकर नहीं और हमारा भी नौकर नहीं । ऐसा ही कोई राह चलनेवाला ऐरा-गैरा आदमी था वह ।" ऐसे व्यक्ति का हद से ज्यादा आदर जगन्नाथ ने किया था, इससे अपने आप से कुपित हो भिखारी के प्रति दिल खोलकर गालियाँ बड़बड़ाकर उसने दरवाज़ा बन्द किया ।
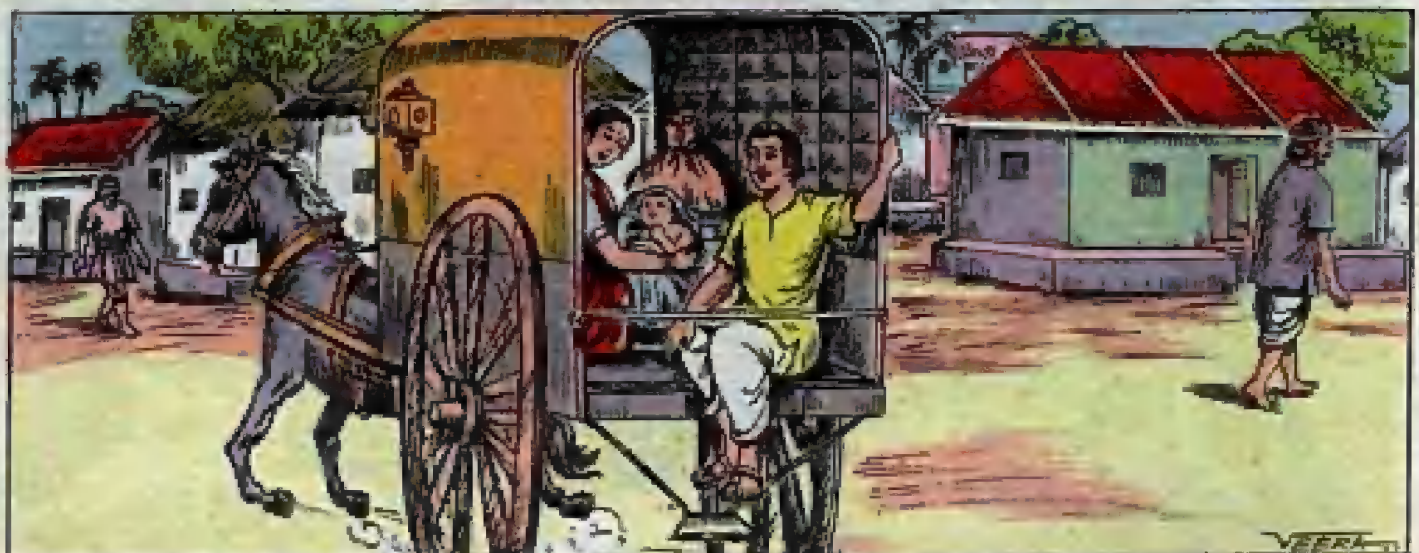
ज्ञान का ख़ज़ाना

इस मास का ऐतिहासिक व्यक्तित्व

सूरदास

सूरदास प्रसिद्ध संत कवि था, जिसका जन्म ९ दिसंबर, १४६४ को हुआ माना जाता है। वह एक निराला कवि था। वह जन्मांध था, फिर भी अपने गीतों में वर्णित श्रीकृष्ण और अन्य पात्रों का उसने ऐसा जीता-जागता वर्णन किया है कि विश्वास नहीं होता वह अंधा था। शायद उसने अपनी अंतर्दृष्टि से सारा देख लिया था।

कुछ लोगों का दावा है कि आगरा से मथुरा जानेवाली सड़क पर स्थित रुनकता गाँव में वह पैदा हुआ था। कुछ लोग कहते हैं उसका जन्म-स्थान दिल्ली के पास सिही था। एक किंवदन्ती के अनुसार उसके पिताजी अकबर के दरबार में एक संगीतज्ञ थे। एक दूसरी दंतकथा उसे चंद बरदाई का वंशज मानती है, जो पृथ्वीराज चौहान का दरबारी कवि था। विश्वसनीय सूत्रों से पता चलता है कि उसके भाई कुछ आक्रमकों से लड़ने गये और फिर लौटे ही नहीं। उनकी खोज करते हुए सूरदास एक कुएँ में गिर पड़ा। वह वहाँ छः दिनों तक रहा, जहाँ उसने कृष्ण का ध्यान-चिंतन किया और अपनी अद्भुत अनुभूतियाँ पाईं। उसके बाद वह लगातार कृष्ण की लीला का वर्णन करता रहा। उसके गीतों का संग्रह है 'सूरसागर' जिसमें पाँच हज़ार गीत हैं। उसने और भी कई गीत रचे हैं

कहते हैं कि वह अपने माँ-बाप के साथ मथुरा के दर्शन करने गया था और वहाँ सुप्रसिद्ध संत वल्लभाचार्य का शिष्य बना।

वह कौन ?

हरे-भरे जंगलों में क्षितिज के पीछे सूर्य का अस्त हो रहा था। एक शान्त संध्या आनेको थी। थोड़ी दूर पर खेतों से घर लौटनेवाले जानवरों की ध्वनि सुनाई देती थी। सारा वातावरण शांतिपूर्ण था।

दो गाँवों के बीच फैले धान के खेतों में से एक छोटा बालक चल रहा था। नदी बहुत दूर नहीं थी। पश्चिमी आकाश में कुछ बादलों की ओट से अस्त होनेवाले सूरज की सुनहरी किरणें चमक रही थीं। सब कुछ बड़ा ही सुन्दर था। बालक के लिए सब कुछ अद्भुत था। वह उस भगवान के प्रति कृतज्ञ था, जिसने अपनी सृष्टि के वैभव की अनूठी झाँकी उसको दिखायी थी।

फिर उसने उस बादल की ओर उड़नेवाले पक्षियों का एक समूह देखा। उस शांत और लुभावने वातावरण में उनकी उड़ान का शांतिमय सौंदर्य देख बालक उस परमानन्द में अपने को पूर्णतः भूल-सा गया। बाहरी दुनिया को भूल वह खड़ा ही रह गया। उसने समाधि की अवस्था का अनुभव किया। अपने शेष जीवन में ऐसी अनुभूतियाँ उसे बार बार प्राप्त करनी थीं। वह एक महान संत बन गया।

वह कौन ?

(पृष्ठ ८ देखिए)

धुंधले प्रकाश में

प्रखर प्रकाश में

आँख का बर्ताव

सूचनाएँ:

अपने आसपास का प्रकाश प्रखर होते हुए किसी दोस्त को आँखें मूँदने के लिए कहिए। यों लगभग एक मिनट बीतने पर उसको आँखें खोलने के लिए कहिए और उन आँखों में देखिए। आप निरीक्षण कर सकते हैं कि आँखें प्रखर प्रकाश के साथ कैसे अपने को अनुकूल बना लेती हैं ?

क्या होता है और क्यों ?

आपके दोस्त की आँखों के तारे उनके खोलने पर तुरन्त काफ़ी बड़े नज़र आएँगे, पर प्रकाश के अनुकूल बनाते बनाते वे छोटे बन जाएँगे। ऐसा इसलिए होता है कि पुतली (कृष्णमंडल), जो तारे के इर्दगिर्द छायी हुई है, आँखों के अनुकूल होने तक एक तंग वलय (बहुत छोटा) होता है; आँखें जैसे ही प्रखर प्रकाश के अनुकूल बनती हैं, प्रत्येक आँख की पुतली तब तक बदलती रहती है जब तक वह काफी चौड़ी होकर तारे का कुछ अंश ढाँक न दे। तब तारे का कम अंश दिखाई देता है, और आप ठीक निरीक्षण करें तो प्रखर प्रकाश के प्रति आँख की यह स्वैच्छिक प्रतिक्रिया आप देख सकेंगे।

आँख की पुतली स्वयंचलित लेन्सवाले कैमेरे के डायफ्राम के समान होती है। जब प्रकाश धुंधला होता है, तब वह आधिक प्रकाश को अंदर आने देती है, और जब प्रखर प्रकाश होता है तो वह कुछ बन्द होकर उस प्रकाश को कम प्रवेशित होने देती है। जैसा कि आप जानते हैं, जब तक आँखें प्रखर प्रकाश के अनुकूल नहीं बनती, तब तक आदमी क्षणिक अंधत्व महसूस करता है।

बिल्ली की आँख की पुतली मनुष्य की आँख की पुतली के समान ही काम करती है, पर उसी तरह प्रकाश को बंद नहीं करती। ऐसा कैसे होता है यह देखेने के लिए बिल्ली की आँख की पुतली का परिवर्नन गौर से देखिए, देखिए कि बिल्ली की आँख के तारे का आकार मनुष्य की आँख के तारे से भिन्न है।

क्या कुत्ते के आँख की पुतली बिल्ली की आँख की पुतली के समान बदलती है ? क्यों नहीं स्वयं देख लेते ?

संसार के आश्चर्य

(पिछली संख्या में हम ने पिरामिडों के बारे में कुछ कहा था ।)

बाबिलोन के उद्यान

किंवदन्ती है कि सेमिरॅमिस एक असीरिया की राजकुमारी थी, जो अजब ढंग से पैदा हुई थी। वह अटरगॅटिस नाम के मत्सय-देवता की पुत्री थी । कबूतरों ने उसका पालन-पोषण किया । सीरिया के राजा के एक परिचारक ने उसको अपने कब्जे में ले लिया । समय आने पर उसने एक राजा से शादी की, और राजा की मृत्यु के बाद उसने राजसिंहासन ग्रहण किया । उसने कई देश जीत लिये । उसे एकमात्र दुख था कि वह हिंदुस्तान को न जीत पायी ।

उसने कई स्मारक बनाये और दुर्गम पहाड़ों में रास्ते बनाये । विश्वास किया जाता है कि बाबिलोन के सुंदर उद्यानों का निर्माण उसने किया । ये झूलते उद्यान कहलाते हैं ।

७०० फीट लंबाई वाले वर्गाकार क्षेत्रों पर ये उद्यान निर्मित हैं । खूब ऊँचाई तक बढ़नेवाले इन उद्यानों में विशाल स्तंभों पर आधारित मज़गियों पर मज़गियाँ होती हैं । सींचाई की विशेष पद्धति पौधों को हराभरा और तरोताज़ा रखती है ।

इतिहासप्रसिद्ध सेमिरॅमिस ईसापूर्व आठवीं शताब्दी में रहीं ।

दूसरे एक वृत्त के अनुसार ईसापूर्व छठी शताब्दी में राज्य करनेवाले असीरिया के सुप्रसिद्ध राजा नेबुशनेझर ने झूलते बगीचे बनाये ।

कहा जाता है कि उसकी एक पर्वतीय प्रदेशों से आयी रानी को अपने घर के आसपासवाले हरेभरे वातावरण का अभाव महसूस हुआ । राजा ने उसके संतोष के लिये इन उद्यानों का निर्माण किया ।

चीन का

संसार का इतिहास कई आधारों के सहारे लिखा जाता है। एक महत्वपूर्ण आधार है महान यात्रियों द्वारा लिखे उनके यात्रा-वर्णन।

प्राचीन काल में घुमक्कडी बहुत कठिन थी और उसमें बहुत धोखे भी होते थे। शक नहीं कि आज की अपेक्षा वह अधिक साहसपूर्ण हुआ करती। एक जगह से दूसरी जगह जाने के लिये रास्ते न थे। जंगल, पहाड़, नदियों को पार करना पड़ता। बीच में कभी महान् संकट भी आन पड़ते। चोर-डाकुओं का सामना करना पड़ता। जैसा कि हम आज करते हैं, लोग मौज-मज़ाक के लिए या स्थल-दर्शन के लिए शायद ही यात्रा करते थे। तब यात्रा के लिए दो प्रमुख प्रेरणाएँ हुआ करतीं— व्यापार और ज्ञानार्जन।

एक महान पंडित सातवीं शताब्दी में चीन से भारत आया। वह था ह्यूएन्-त्संग। वह बुद्ध का अनुयायी था और बुद्धधर्म के बारे में अधिक सीखने के लिए यहाँ आया था। भारत में जो देखा और जो अनुभव किया उसका विस्तृत वर्णन

महान यात्री

पंडित जवाहरलाल नेहरू ने 'संसार के इतिहास की झाँकियाँ' नामक अपने ग्रंथ में इस महान यात्री के बारे में लिखा है ।

"वह एक धार्मिक प्रवृत्ति का बौद्ध था और बुद्ध धर्म संबंधी पवित्र स्थानों के दर्शन करने तथा कुछ धर्म-ग्रंथों को ले जाने यहाँ आया था। गोबी के रेगिस्तान को पार कर रास्ते में ताश्कंद और समरकंद और बाहख और खोतान और यारकंद जैसे शहरों का दर्शन उसने किया । वह भारत भर में घूमा, शायद सिलोन भी गया। उसने कई देशों की यात्रा की, भारत के अलग अलग हिस्सों में रहनेवाले लोगों को देखा, अद्भुत कहानियाँ सुनीं, और बुद्ध और बोधिसत्व के चमत्कारों की असंख्य कथाएँ जान लीं । इस सभी बारीक निरीक्षण के आधार पर इनका निराला और मनोरंजक वर्णन उसने अपने ग्रंथ में लिखा है ।"

उसने लिख रखा है ।

गोबी के भयंकर रेगिस्तान को पार कर मौत से बाल बाल बचते हुए वह टरफन नामक आश्चर्यजनक शहर में पहुँचा । संस्कृत और बुद्ध-धर्म से प्रभावित महान संस्कृति का वह एक केन्द्र था। (शहर अब भी वहाँ है, पर तब की वे विशेषताएँ अब नहीं रहीं है ।)

भारत पहुँचने र उसको बड़ी खुशी हुई और खूब आश्चर्य लग,; खुशी इस लिए कि वह बुद्ध की भूमि में आ।ा था, और आश्चर्य इस लिए कि यहाँ का वैभव और संस्कृति अद्वितीय थी। भारत के इस विशाल क्षेत्र पर तब सम्राट हर्ष वर्धन शासन करता था ।

पाटलीपुत्र के नालन्दा विद्यापीठ में वह कई वर्ष रहा । नालन्दा भिक्षुओं का विहार तथा विद्यापीठ था, कहतें हैं वहाँ १०,००० छात्र तथा भिक्षु निवास करते थे । वह बुद्ध-विद्याओं का एक विशाल केन्द था और ब्राह्मण-विद्याओं के गढ़ बनारस का प्रतिद्वंद्वी था ।

भारत के अतीत में झाँक कर देखें !

१. दिल्ली का अंतिम हिन्दू राजा कौन था ?
(अ) उससे संबंधित रसिकता की कहानी क्या है ?
(ब) कौनसा हिन्दू उसका शत्रु बना ?
(क) उस शत्रु के संबंध में आगे क्या हुआ ?

२. मृत्यु-शय्या पर होते हुए दिल्ली के किस शासक ने अपनी पुत्री को अपना वारिस करार दिया ?
(अ) उस पुत्री का नाम क्या था ?
(ब) उसने किस से शादी की ?
(क) उस दंपति के संबंध में आगे क्या हुआ ?

३. अठारहवीं शताब्दी में दिल्ली पर आक्रमण करके किसने ३०,००० लोगों की क़तल की ?
(अ) तब दिल्ली पर कौन शासन करता था ?
(ब) वह जिस मशहूर सिंहासन को ले गया उसका नाम क्या था ?
(क) और कौन-सी मूल्यवान वस्तु वह अपने साथ ले गया और कैसे ?

(पृष्ठ ८ देखिए)

अपने सामान्य ज्ञान की परीक्षा करें ?

१. सन् १९६७ में भारत के एक रेलवे स्टेशन के इमारत का शताब्दि समारोह संपन्न हुआ। उस स्टेशन का नाम क्या है ? उसको वह नाम क्यों दिया गया ?
२. एक महान् पश्चिमी विद्वान को 'हेमलॉक' पेय पिलाया गया ? वह कौन विद्वान था ? उस पेय का उस पर क्या प्रभाव पड़ा ?
३. स्वतंत्र होने के पूर्व घाना का नाम क्या था ?
४. राजकीय परिभाषा में जिस को 'नेशनेलिस्ट चायना' कहते हैं, उस देश का पहला नाम क्या था ?
५. जिन को बेनेलक्स देश कहते हैं वे देश कौन कौन-से हैं ?
६. चन्द्र पृथ्वी से कितनी दूरी पर है ?
७. प्रचलित शब्दावलि के अनुसार कॉस्मिक वर्ष कौन-सा है ?
८. दुनिया का सब से बड़ा देश कौन-सा है ?
९. संसार का छोटा-से-छोटा स्वतंत्र प्रदेश कौन-सा है ?
१०. नक्षत्र-मंडल क्या है ?

(पृष्ठ ८ देखिए)
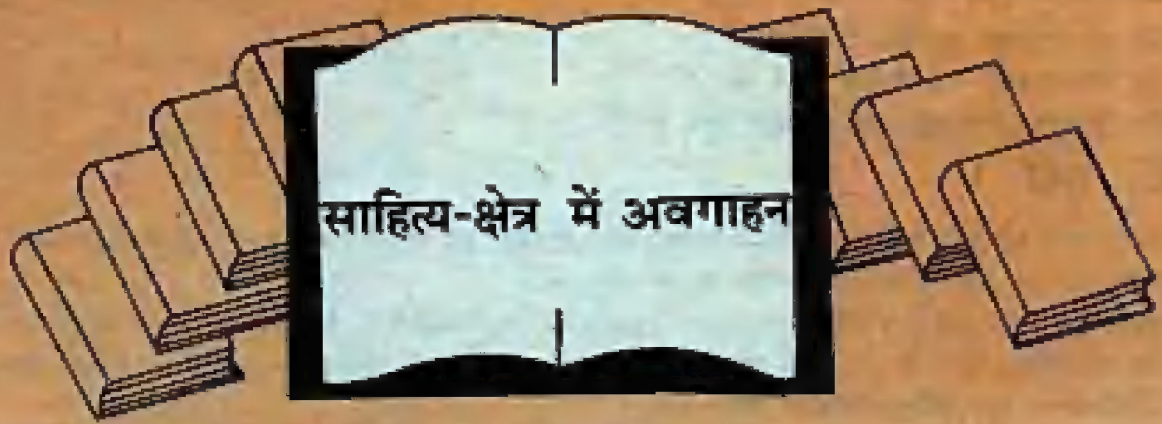
१. जिसके खोये ग्रंथों की खोज सन १९१२ में की गई वह महान् संस्कृत नाटककार कौन ?

(अ) उनकी खोज किसने और कहाँ की ?
(ब) वे कितने ग्रंथ हैं ?

२. यम से मृत्यु का रहस्य पूछनेवाला छोटा बालक कौन था ?

(अ) उसकी कथा कहाँ पायी जाती है ?
(ब) वह ग्रंथ जिस नाम से पहचाना जाता है, उसका अर्थ क्या है ?

३. वाल्मीकि के रामायण के दो सुप्रसिद्ध रूपान्तर कौन-से हैं ?

४. वह प्राचीन राजा कौन है जिसका नाम एक सुप्रसिद्ध कथा-माला में आता है ?

(अ) उस कथा-माला का नाम क्या है ?
(ब) वह कथा-माला किस पर आधारित है ?

(पृष्ठ ८ देखिए)

सभी भारतीय भाषाओं का एक शब्द सीख लें ।

आसामी: मनुहा; **बंगला:** मानूस; **अंग्रेज़ी:** मॅन; **गुजराती:** माणस; **हिन्दी:** आदमी; **कन्नड:** मनुष्य; **काश्मीरी:** महन्यु; **मलयालम:** मनुष्यन्; **मराठी:** माणूस; **उड़िया:** मनीष; **पंजाबी:** मनुख; **संस्कृत:** मानव; **सिंधी:** माणहू; **तमिळ:** मनिदन; **तेलुगु:** मनिशी; **उर्दू:** आदमी

आपको विश्वास है ?

१. कि पूरी रामायण वाल्मीकि ने लिखी ?
२. कि फ्रानकेन्स्टाइन एक भयंकर प्राणी था ?
३. कि डिनोज़र संसार का सब से बड़ा प्राणी है ?

नहीं, नहीं !

१. उत्तर कांड में वर्णित सीता-त्याग और उसके वनवास की कथा किसी और कवि ने लिखी है। उसकी शैली अलग है। इसमें कोई शक नहीं कि उसका रचयिता भी एक महान् कवि था।
२. फ्रानकेन्स्टाइन, मेरी शैले द्वारा लिखित उसी नाम के उपन्यास का एक शोध-छात्र है। मुर्दों के अवयवों को इकट्ठा करके उसमें फिर वह प्राण-प्रतिष्ठा करता है। वह एक राक्षसी प्राणी बना और उसने अपने निर्माता का खून किया। लेकिन समय के बीतते 'फ्रानकेन्स्टाइन' का मतलब 'राक्षसी प्राणी' हुआ।
३. नीला तिमिंगल संसार का सब से बड़ा प्राणी है, जिसकी लंबाई ३० मीटर और वज़न १७५ टनों तक हो सकता है।

उत्तरावलि

वह कौन है ?

श्री रामकृष्ण परमहंस, जो अपने पूर्व-जीवन में गदाधर कहलाते थे।

इतिहास

१.पृथ्वीराज चौहान।
(अ) स्वयंवर-मंडप से संयुक्ता को अपने घोड़े पर ले जाकर उससे विवाह किया। (ब) जयचन्द, कनौज का राजा और संयुक्ता का पिता। (क) जयचन्द ने मुहम्मद घोरी से हाथ मिलाकर उसे दिल्ली पर आक्रमण करने के लिए प्रवृत्त किया। पृथ्वीराज ने घोरी को पराजित किया, उसे बंदी बनाया और फिर छोड़ दिया। अपमानित घोरी ने सन् ११९२ में फिर दिल्ली पर चढ़ाई की और पृथ्वीराज को पराजित कर उसे मार डाला। अगले वर्ष घोरी ने जयचन्द को भी मार डाला और कनौज पर कब्ज़ा किया।
२. अल्तमश।
(अ) रज़िया सुलताना। (ब) अल्तुनिया के नेतृत्व में उसके सरदारों ने बगावत की। बड़े नाटकीय ढंग से रज़िया ने अल्तुनिया को अपने प्रेम-पाश में कर लिया और उसके साथ विवाह करने में वह सफ़ल हुई। (क) बागी सरदारों ने दोनों को मार डाला।
३. पार्शिया का नादिरशाह।
(अ) मुग़ल खानदान का मुहम्मद शाह। (ब) मयूर-सिंहासन। (क) कोहिनूर हीरा। मुग़ल सम्राट ने उसे अपनी पगड़ी में छिपा रखा था। नादिरशाह ने पगड़ियों के अदल-बदल की माँग की और यों उस अनमोल रतन पर कब्ज़ा किया।

सामान्य ज्ञान

१. व्हिक्टोरिया टर्मिनस, महारानी व्हिक्टोरिया की स्वर्ण-जयंती के उत्सव के समय यह बनाया गया था।
२. वह विद्वान् था साक्रेटिस। हेमलॉक एक विषैला पेय था और उसे पीकर उसकी मौत हुई।
३. गोल्ड कोस्ट
४. तैवान या फोर्मोसा।
५. बेल्जियम, नेदरलैंडस् और लुक्झेंबर्ग।
६. २३८, ८५५ मील।
७. लगभग २५० कि. मि. प्रति सेकंड की गति से अपने नक्षत्र-मंडल के मध्य की एक परिक्रमा करने के लिये सूरज को २५०. मिलियन वर्ष लगते हैं। इस काल को कास्मिक वर्ष कहते हैं।
८. रशिया (यु. एस्. एस्. आर्.)।
९. व्हेटिकन शहर।
१०. नक्षत्रों का एक विशाल समूह जो गुरुत्वाकर्षण के कारण एक बंधन में बंधा होता है।

साहित्य

१. भास, जो ईसा पूर्व पाँचवीं या छठी शताब्दी में रहा।
(अ) पंडित गणपति शास्त्री ने केरल में उनको खोज निकाला। (ब) तेरह
२.नचिकेत।
(अ) एक उपनिषद् में। (ब) उपनिषद् का शब्दशः अर्थ है—"पास में बैठना।" उसका अन्दरूनी अर्थ है कि ये पाठ उन शिष्यों को पढ़ाये गये जो गुरु के पास बैठने की क्षमता रखते थे।
३. तमिळ में कंबन का रामायण और हिंदी में तुलसीदास का श्री रामचरितमानस।
४. राजा विक्रमादित्य।
(अ) वेताल पंचविंशति।(ब) कथासरित्सागर।
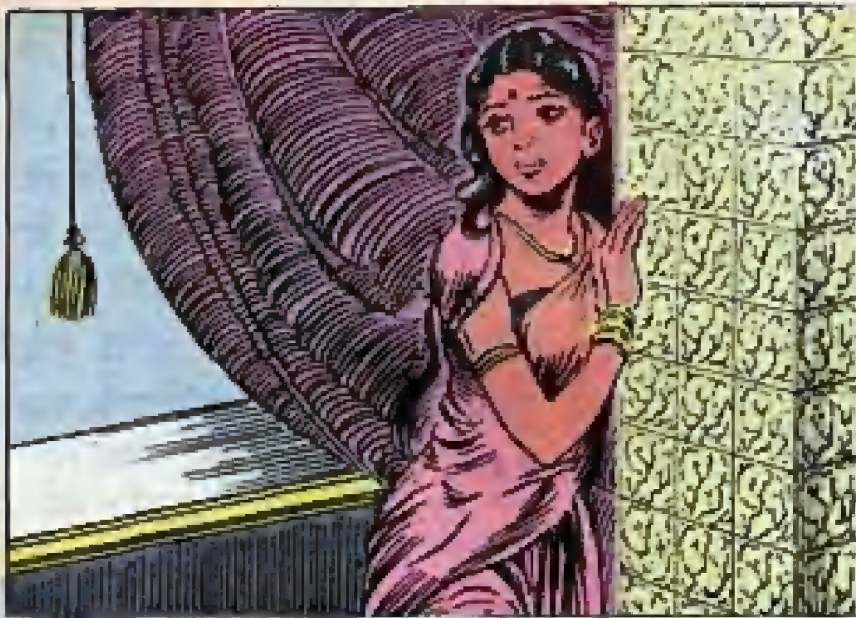
काव्य-कथाएँ

मणिमय नूपुर—३

पूम्पुहार नगरी के युवक व्यापारी कोवलन ने कण्णगी के साथ विवाह किया। लेकिन विवाह के कुछ दिन बाद वह कण्णगी को छोड़ नर्तकी माधवी के प्रेम-पाश में फँस गया। फिर भी कण्णगी सारी व्यथाओं को मौन बन सहती रही।

एक बार पूम्पुहार नगर में एक मेला लगा। कोवलन तथा माधवी ने नगर की गलियों से गुज़रनेवाली शोभा-यात्रा को देर तक देखा। उन्होंने निश्चय किया कि उस उत्सव के मनोविनोद के कार्यक्रम में भाग लें।

कोवलन खच्चर पर और माधवी बैलगाड़ी पर सवार हो मेले में घूमने निकले और सेवक उनके पीछे पैदल चल पड़े। वे सब नगर के प्रमुख रास्तों को पार कर उत्सव के मंडप में पहुँच गये।

समुद्र के प्रशान्त तट पर एक सुंदर प्रदेश चुनकर सेवकों ने दोनों के निवास का शानदार प्रबंध किया। रंगबिरंगे पर्दे लगाये गये और कोवलन के विश्राम के लिए मुलायम गद्दा लगाया गया। इसके बाद माधवी मधुर स्वरों में गाने लगी।

माधवी के गीत में न जाने क्यों कोवलन को श्लेषार्थ प्रतीत हुआ। माधवी ने वास्तव में कोवलन को छोड़ और किसी से प्यार नहीं किया था। पर कोवलन को लगा कि माधवी किसी और का स्मरण करके उसकी याद में गा रही है। वह उसी क्षण उठकर बाहर चला गया।
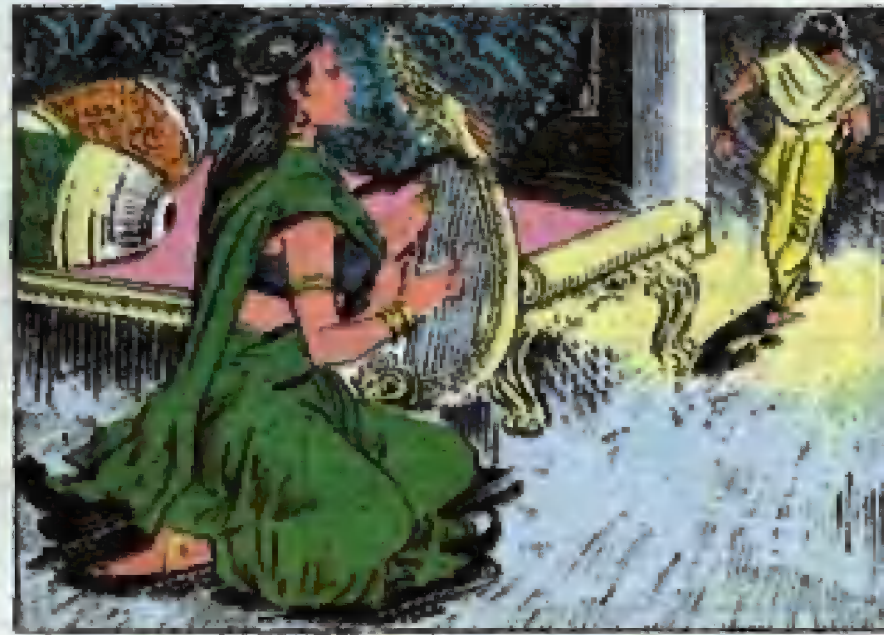
माधवी को थोड़ी देर बाद मालूम हुआ कि कोवलन ने उसका परित्याग किया है। अत्यन्त दुखी हो वह घर पहुँची और रो पड़ी। उसने एक पत्र लिखा और सखी के हाथ उसे कोवलन की ओर भेज दिया।

सखी कोवलन के पास पहुँची और माधवी का पत्र एवं पुष्पमाला उसके हाथ समर्पण करने लगी, पर कोवलन ने उन्हें स्वीकार नहीं किया। अपनी पत्नी कण्णगी की याद आते ही उसका दिल व्यथा से भर गया। चिन्ता में डूबकर वह घर की ओर चल पड़ा।

कण्णगी ने घर लौट आये पति का आँसुओं से स्वागत किया। कोवलन अपने किये पर पछताने लगा। कोवलन ने कण्णगी से क्षमा-याचना की।

कोवलन ने जिस नगरी में अत्यन्त वैभवपूर्ण जीवन बिताया था, उसी नगर में दरिद्रावस्था में दिन बिताना उसे पसंद नहीं था। इस लिए किसी अन्य नगर में जाकर जीवन-या-पन करनेकी उसने सोची। कोई व्यापार करना चाहे तो पूँजी का अभाव था। इसलिए कण्णगी ने अपने पैरों के पुराने नूपुर लाकर कोवलन को दिखा दिये।
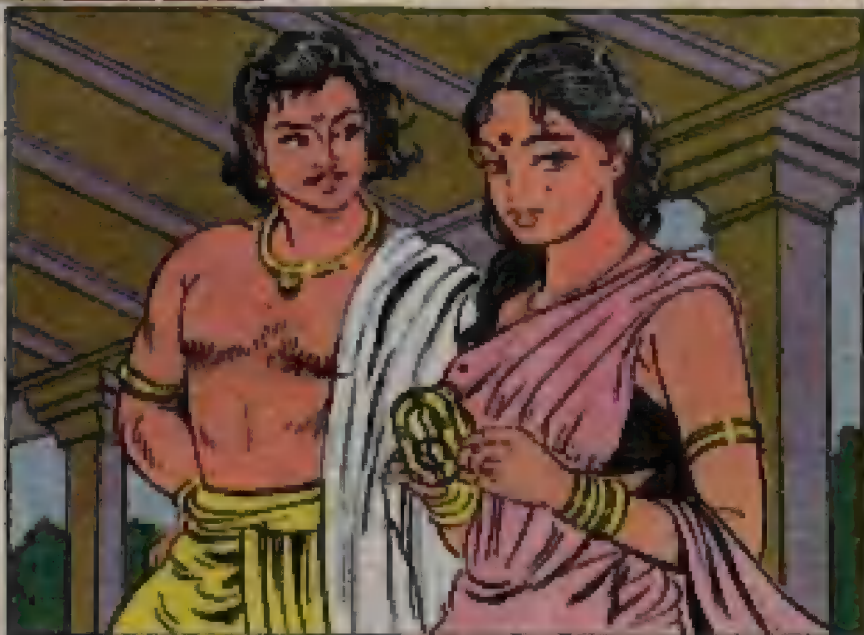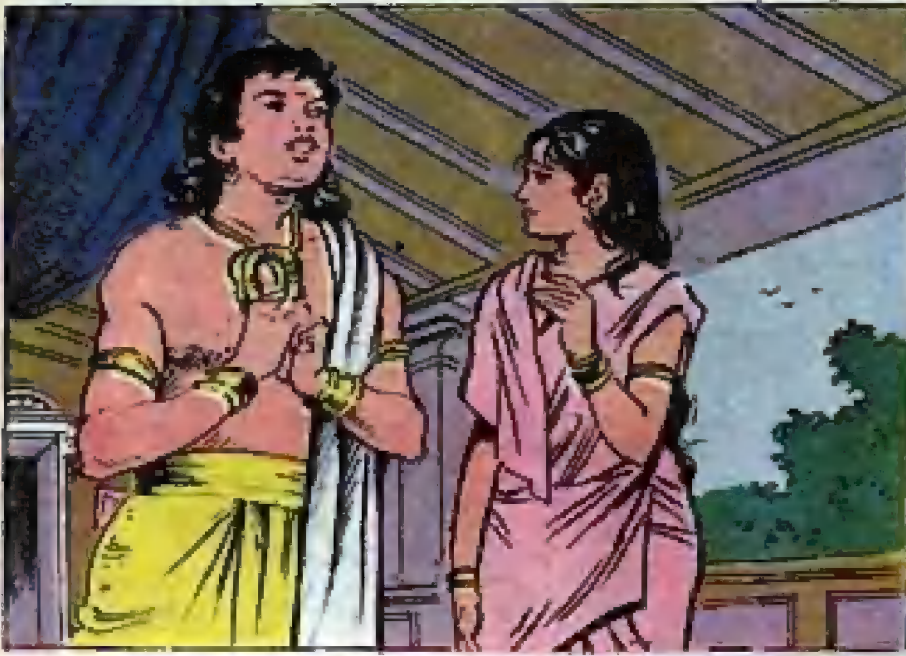
उन नूपुरों को देखकर कोवलन प्रसन्न हो गया और उसने कहा— "सवेरा होने के पहले हम प्राचीन नगरी मदुरा के लिए रवाना हो जाएँगे। वहाँ पर ये नूपुर बेचकर जो धन मिलेगा, उससे कोई नया व्यापार शुरू करेंगे और अपना नया जीवन प्रारंभ करेंगे । आइंदा मैं यों ग़लती नहीं करूँगा ।"

कोवलन-कण्णगी जिस सुसंपन्न पूम्पुहार नगरी में पैदा होकर बड़े हुए थे, उसे छोड़कर प्रातःकाल के पूर्व मदुरा की ओर चल पड़े ।

मदुरा नगरी अभी काफ़ी दूर थी। वे दिन पर यात्रा करते, रात मंदिरों या सरायों में बिताते। जंगल, पहाड़ तथा नदियों को पार करते हुए कण्णगी तथा कोवलन मदुरा की ओर यात्रा करते रहे ।

(शेष अगे अंक में)

श्रम का मूल्य

गंगापुर के ज़मींदार की कचहरी में एक स्वर्णकार था, जिसका नाम था वेंकटाचारी। उसके पुरखे अनेक वर्षों से गंगापुर के ज़मींदारों के लिए आभूषण तथा चाँदी के विविध उपकरण तैयार करके सुखपूर्वक जीवन-यापन करते आये। उनको ज़मींदार की ओर से एक मकान तथा कुछ ज़मीन भी प्राप्त हुई थी।

वेंकटाचारी के एक पुत्र था, जिसका नाम था वरदाचारी। वह अव्वल दर्जे का आलसी था। अभी वरदाचारी पंद्रह साल का किशोर था कि वेंकटाचारी का देहान्त हुआ। वरदाचारी ने अपना पुश्तैनी पेशा बिलकुल छोड़ दिया और अपने पिता के द्वारा छोड़ी संपत्ति पर मौज़ उड़ाने लगा।

एक दिन ज़मींदार ने वरदाचारी को बुला भेजा और उसे कुछ आभूषण बनानेका काम सौंपना चाहा। पर वरदाचारी ने कुछ बहाना बनाया और घर चला आया।

जब वरदाचारी की माँ को इस बात का पता चला तो उसको बड़ा दुख हुआ। उसने कहा—"बेटा, कचहरी का काम भगवान के वरदान जैसा है। ज़मींदार के दिए काम को तुम्हें स्वीकार करना चाहिए था।"

वरदाचारी ने माँ को समझाया —"माँ, आभूषण गढ़नेका काम तो मैं अच्छी तरह जानता नहीं हूँ। मैं काम को कैसे स्वीकार करूँ?"

"बेटा, जो यह काम जानते हैं, उनसे हम आभूषण गढ़वा ले सकते हैं। ज़मींदार से हमें जो मज़दूरी मिलेगी, उसमें से दैनिक मज़दूरी के हिसाब से थोड़ा-बहुत चुकाकर बाकी धन तुम्हें मिल सकता था न?" माँ ने सलाह दी।

वरदाचारी उसी समय ज़मींदार की कचहरी में पहुँच गया, ज़मींदार के दर्शन करके उसने बताया कि वह आभूषण बनवाकर दे सकता है। ज़मींदार

रमेश शर्मा

ने उसको समझाया कि उसे कैसे आभूषण गढ़वाने हैं और तब पूछा— "इन आभूषणों के लिए कितना सोना और कितने रत्न चाहिए ?" वरदाचारी ने सोचा कि ज़मींदार के सामने यह प्रकट करना उचित नहीं है कि वह आभूषण गढ़ना नहीं जानता है । इस लिए उसने कहा— "प्रभु, मैं कल सुबह आकर आप को सारा विवरण लिख दूँगा ।" यह कह कर वरदाचारी आभूषणों का विवरण लिख कर चला आया ।

इसके बाद वरदचारी अपने पिता के एक स्वर्णकार मित्र के यहाँ पहुँचा और आभूषणों के लिए आवश्यक सोना तथा रत्नों का विवरण उससे ले लिया । वरदाचारी में यह आकस्मिक परिवर्तन देखकर स्वर्णकार मित्र को बड़ा आश्चर्य हुआ और अपार आनन्द भी ।

ज़मींदार ने अपनी कचहरी से आभूषणों के लिए आवश्यक सोना तथा रत्न लेकर वरदाचारी अपने पिता के कुछ विश्वस्त मित्रों के पास गया और उनको गहने गढ़वाने का काम सौंप दिया ।

मज़दूरी में से कुछ भी पैसा ज़मींदार ने पेशगी नहीं दिया । इस कारण वरदाचारी को अपना धन मज़दूरी की पेशगी के रूप में देना पड़ा । स्वर्णकारों को पता चला कि वरदाचारी स्वयं गहने गढ़ना नहीं जानता, तो वे चार दिनों का काम सात दिनों तक खींचते गये । इस लिए वरदाचारी को लगभग दुगुना मज़दूरी चुकानी पड़ी ।

आभूषण बनकर तैयार हो गये, लेकिन सोना थोड़ा अधिक लगा । वरदाचारी अब ज़मींदार से सोना नहीं माँग सकता था । उसने अपना धन खर्च करके गहने गढ़वाने का काम पूरा करवाया ।

इसके बाद वरदाचारी आभूषण लेकर ज़मींदार की कचहरी में पहुँचा । ज़मींदार ने आभूषणों की कारीगरी की भूरी भूरी प्रशंसा की और मज़दूरी के रूप में दस मुद्राएँ वरदाचारी के हाथ में थमा दी ।

उन मुद्राओं को देख वरदाचारी चकित रह गया । अपना धन खर्च करके उसने जो सोना खरीदा था, उसमें मज़दूरी मिलाकर कुल सौ मुद्राओं का खर्च वह कर चुका था । और ज़मींदार ने केवल दस ही मुद्राएँ दी थीं ।

ज़मींदार ने वरदाचारी की ओर देखते हुए

कहा— "मैं तुम्हारे पिता को इस प्रकार के काम के लिए आठ ही मुद्राएँ दिया करता था। लेकिन तुम्हारी कारीगरी मुझे ज़्यादा पसंद आई, इस लिए तुमको मैंने दो मुद्राएँ अधिक दी। मुझे कुछ और गहने भी बनवाने हैं। कब वह काम शुरू करोगे? मुझे केवल पाँच दिनों में ये गहने बनकर तैयार होने चाहिये, समझे?"

वरदाचारी ने यह काम अस्वीकार करना चाहा, लेकिन ज़मींदार के सामने इनकार करने की किसी की हिम्मत न थी। वह पसोपेश में पड़कर ज़मींदार की ओर देखता ही रह गया।

ज़मींदार ने वरदाचारी के उत्तर की प्रतीक्षा न करते हुए आभूषण बनानेके लिए आवश्यक सोना व रत्न मँगवा लिये और उन्हें वरदाचारी को सौंपते हुए कहा— "इस काम के लिए जितना सोना चाहिए, उसकी जानकारी मैंने पहले ही प्राप्त कर ली है। अब उसके लिए तुम को मेहनत करने की ज़रूरत नहीं।" इतना कहकर ज़मींदार हँस पड़ा।

इसके बाद वरदाचारी ने पाँच दिनों की अवधि में काम पूरा करके गहने ज़मींदार को सौंप दिये। इस काम में वरदाचारी ने एक सौ पचास मुद्राएँ खर्च कीं। और ज़मींदार ने मज़दूरी के मद में उसे सिर्फ पंधरह मुद्राएँ दे दीं।

अब ज़मींदार ने कुछ और आभूषण गढ़ने का काम वरदाचारी को दिया। वरदाचारी ने घर लौटकर सारा वृत्तान्त अपनी माँ को सुनाया। उस वक्त उसकी आँखों में आँसू बह निकले।

वरदाचारी को सान्त्वना देते हुए माँ ने समझाया— "बेटा, तुमने अपने पिता से थोड़ा-बहुत काम तो सीख ही लिया है, अब ये
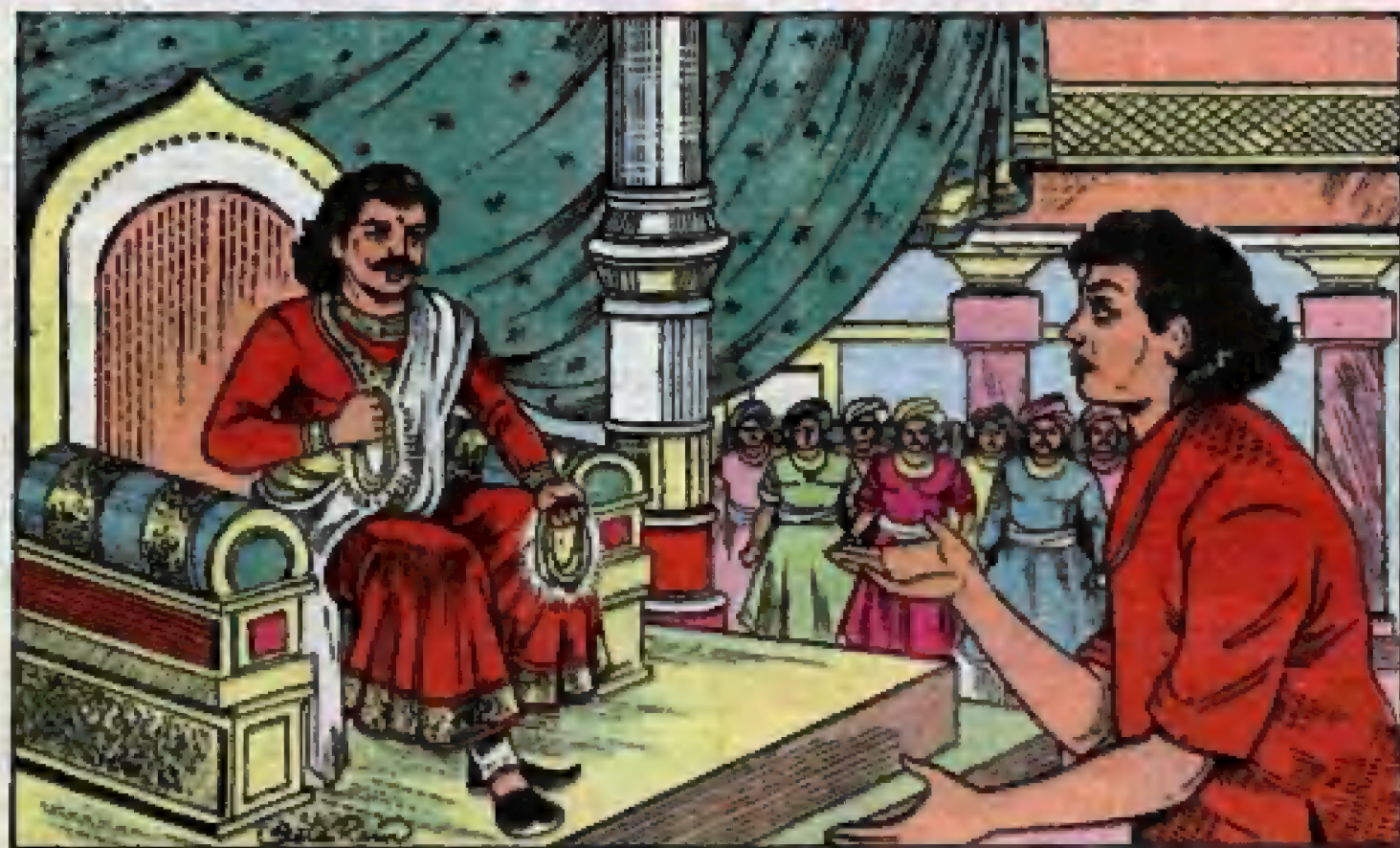
आभूषण गढ़नेवाले कारीगरों की कार्य-शैली को भी देख रहे हो। थोड़ी-बहुत मेहनत करोगे तो बाहर मज़दूरी नहीं देनी पड़ेगी। पैसा ज़रूर बच जाएगा।"

वरदाचारी को माँ का उपदेश बहुत अच्छा लगा। वह दिन-रात परिश्रम करके गहने गढ़ने लगा। अब की ज़मींदार ने जो सोना दिया था, उसमें रत्ती भर भी कमी नहीं आई। आभूषण भी पहले से कहीं अधिक सुन्दर बन पड़े। अपने पुत्र के बनाये आभूषण देखकर माँ बहुत खुश हुई और उसने बेटे को आशीर्वाद दिया— "बेटा, तुम शीघ्र ही एक कुशल स्वर्णकार और कारीगर बन जाओगे!"

वरदाचारी गहनों के साथ ज़मींदार के यहाँ पहुँचा। उसकी कारीगरी पर अत्यन्त प्रसन्न हो ज़मींदार ने उसे दो मुद्राएँ मज़दूरी के रूप में दे दीं।

अब वरदाचारी को अत्यन्त क्रोध आया, गुस्से में आकर ज़मींदार से उसने कहा— "प्रभु, बुरा मत मानिए। आप परिश्रम का मूल्य नहीं जानते। आप मुझे आज्ञा दीजिए।"

इस पर ज़मींदार ठहाके मारकर हँस पड़ा और उसने वरदाचारी से प्रश्न किया— "तो क्या वे गहने तुमने अपने हाथों से गढ़े हैं?"

वरदाचारी ने आश्चर्य के साथ ज़मींदार की ओर देखा। ज़मींदार ने उसके कन्धे पर प्यार से हाथ रखते हुए कहा— "आज तक मैंने जो मज़दूरी तुमको दी, उसको तुमने कभी कम नहीं बताया था। याने उस समय तुम्हारा थोड़ा निजी धन खर्च हुआ ज़रूर, परंतु तुम्हारे श्रम के मूल्य में कोई नुक़सान नहीं पहुँचा। अब की बार तुम को परिश्रम का मूल्य पहली बार मालूम हुआ लगता है। मैं बस, तुमसे यही चाहता था। आज तुम्हारे पिता की इच्छा पूरी हो गयी! आज से मेरी कचहरी के प्रधान स्वर्णकार तुम्हीं हो।"

ज़मींदार ने वरदाचारी को एक हज़ार मुद्राएँ देकर उसका सत्कार किया और उसे घर रवाना कर दिया।

जो वस्त्र धारण कर बलराम गोकुल गया था, उन्हीं वस्त्रों के साथ मथुरा लौटकर सीधे कृष्ण के पास पहुँचा। कृष्ण ने बलराम के चरणों में प्रणाम किया। बलराम ने कृष्ण का स्वागत किया और फिर दोनों भाई वसुदेव के घर गये। वसुदेव ने बलराम को आलिंगन किया और कुशल-क्षेम पूछा। बलराम और कृष्ण के अचानक दर्शन करके वसुदेव को अत्यन्त आनन्द हुआ। इतने में कुछ गोप और गोपियाँ भी वहाँ उपस्थित हुईं। बलराम और कृष्ण से सभी बातें करना चाहते थे। दोनों के सामने दूध की प्यालियाँ पहुँच गईं। कृष्ण और बलराम ने बड़े संतोष के साथ दुग्धपान किया। बलराम ने गोकुल में जो महान् कार्य किया उसका सारा वृत्त कह सुनाया।

एक दिन बलराम किसी जगह बैठा था, उसने कालिन्दी को पुकारकर आदेश दिया कि वह जहाँ बैठा है, वहीं पहुँचकर उसे नहला दे। पर कालिन्दी आने से रही, इस लिए बलराम क्रुद्ध हो उठा। कालिन्दी में इतना साहस कि वह बलराम की आज्ञा का उल्लंघन करे! उसके आदेश की अवहेलना करनेवाले को उचित दण्ड मिलना ही चाहिए। बलराम ने थोड़ी देर के लिए चिन्तन किया। कालिन्दी को कैसा दण्ड दिया जाए। उस पर उसने अपने हल को कालिन्दी की ओर इस तरह बढ़ाया कि बृन्दावन तक कालिन्दी की एक नहर बन गई। उससे गोपकों का बड़ा ही उपकार हुआ।

यों कुछ और दिन बीत गये। एक दिन कृष्ण ने यादवों की सभा में एक प्रस्ताव रखा—

की ओर समुद्री तट पर कोई अच्छा-सा स्थान पा सके, तो एक नई नगरी वहाँ बसा सकते हैं। हमारे नये निवास के लिए मैं एक अच्छे प्रदेश का चुनाव करता हूँ, वहाँ जाकर हम लोग सुख और संतोष के साथ अपने दिन बिताएँगे। इस के बारे में आप लोगों के विचार मैं जानता चाहता हूँ।"

कृष्ण का प्रस्ताव यादव लोगों को उचित ही लगा। जरासंध का वध करना सहज संभव नहीं है, उसके साथ अपार सेना है। जरासंध के साथ युद्ध किया जा सकता है, परंतु उसका अंत करना उतना ही कठीन है। युद्ध में दोनों दलों के लोगों का सर्वनाश अवश्यंभावी है। पिछली बार जरासंध ने जो उत्पात मचाया था, उसे सब देख चुके थे। कितने ही योद्धाओं को अंतिम साँस लेनी पड़ी थी। आखिर युद्ध के द्वारा किसी को लाभ तो हुआ नहीं। फिर क्यों न उसे रोकने का कुछ उपाय करें? हो सकता है, जरासंध वहाँ भी पहुँच सकता है। पर कहा नहीं जा सकता कि ऐसा ही होगा। कृष्ण का प्रस्ताव बड़ा समयोचित है। इस लिए यादवों के नेताओं को लगा कि अगर कृष्ण कोई सुरक्षित स्थान बनाता है तो वहाँ पर जाकर बसना हितकर होगा।

कृष्ण ने अपने मन में वह स्थान निश्चित किया जहाँ पर सभी यादवों को ले जाना है। तब जाकर सब को यात्रा की तैयारियाँ शुरू करनेका आदेश दिया।

इसी समय एक समाचार मिला कि कालयवन अपनी सेना के साथ मथुरा नगरी पर आक्रमण

"हम जिस मथुरा नगरी में रहते हैं, ऐसी सुंदर नगरी विश्व में और कहीं नहीं है। मथुरा जैसा क्षेत्र अन्यत्र नहीं है। वैसे हमारा पाल-पोस गोकुल में हुआ है अवश्य, पर हमारी जन्म भूमि यही नगरी है। यहाँ लौटकर ही हमने सब प्रकार के ऐश्वर्य प्राप्त किये हैं। पर यहाँ शत्रुओं का आतंक दिन-ब-दिन बढ़ता जा रहा है। आप लोगों ने स्वयं देखा है, विश्व भुर के सारे राजा जरासंध से मिलकर किस प्रकार अत्याचार कर बैठे हैं? जब शत्रु हम पर अचानक आक्रमण करता है तो हमारा बड़ा नुकसान होता है। इस लिए क्या यह उत्तम नहीं होगा कि हम इस स्थान को छोड़कर कहीं और चले जाएँ? मैं इस संबंध में पिछले कुछ दिन बराबर सोच रहा हूँ। अगर हम पश्चिम

करने निकल पड़ा है और जरासंध भी ऐसी ही कुछ योजना बना रहा है। यह खबर पाकर कृष्ण ने यादवों को समझाया— "अब हम लोग आज ही यहाँ से प्रस्थान करेंगे। यही समय अधिक शुभप्रद है! अगर हम देर करते हैं तो और एक युद्ध होगा। युद्ध करने से हम डरते तो हैं नहीं। पर क्यों बेगुनाहों का नाश होता रहे? कालयवन के यहाँ पहुँचने से पहले ही हम इस नगरी को छोड़ चले। अब यहाँ अधिक समय तक रहना किसी के लिए कल्याणप्रद नहीं है। अगर नया स्थान बनाने का विचार आपको ठीक लगता है तो आज ही यहाँ से निकलना उचित होगा।"

वसुदेव, अग्रसेन, बलराम और कृष्ण तथा उनके साथ वृष्टि एवं अंधक वीर, और उनके परिवार असंख्य हाथी, घोड़े और रथों के साथ अपनी अपनी संपत्ति लेकर मथुरा छोड़ पश्चिम की दिशा में निकल पड़े। कई दिनों की यात्रा के बाद वे पश्चिम समुद्र के तट पर पहुँचे। वह अनेक वनों से पूर्ण रेतीला प्रदेश था। वहाँ की प्राकृतिक सुंदरता देखते ही बनती थी। शाम को सूरज जब पश्चिमी समुद्र में डूबने को होता, तो बड़े ही रंगबिरंगे दृश्यों का निर्माण होता। समुद्री तट की जलवायु भी बड़ी सुहावनी थी। समुद्र की लहरें जब किनारे पर आकर टकराती तो एक मनोहारी संगीत उमड़ पड़ता। सुबह-शाम समुद्र के तट पर ही रहने को जी करता। उस स्थान का एक और भी खास आकर्षण था। उसी प्रदेश में प्राचीन काल में एकलव्य ने द्रोणाचार्य की पूजा की थी।

स्थान के संबंध में निर्णय करनेके बाद भवन बनाये गये, मार्गों की रचना हुई, उद्यानों का निर्माण किया गया और उस नगरी का नाम द्वारवती रखा गया। सब लोगों के लिए नगर के निवास के योग्य सारे प्रबंध किये गये। सभी को अब शत्रु का भय न रहा। वे चिन्तारहित सुखपूर्ण जीवन बिताने लगे। इधर द्वारवती का निर्माण हुआ और उधर कुछ और घटनाएँ घटीं। उनकी कहानी यों है—

एक समय वृष्टि और अंधक वंशों का एक गुरु था, जिसका नाम था गर्ग। वह ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करता था। एक बार गर्ग यादवों की नगरी में पहुँचा, तो उसका उपहास किया— 'गर्ग पुरुष नहीं, नारी है।' यह उपहास सुनकर यादव

मौन रहे, किसी ने अपना आक्षेप प्रकट नहीं किया ।

इस पर गर्ग आग-बबूला हो गया, उसने जंगल में जाकर लोह-चूर्ण का सेवन करते हुए बारह वर्ष पर्यंत कठोर तपस्या की, शिवजी को प्रसन्न किया और वृष्टि तथा अंधक वंशों को निर्मूल करनेवाले पुत्र का वरदान माँग लिया। वर-प्राप्ति का समाचार पाते ही पुत्रहीन यवनेश्वर ने उसको बुला लिया और अपनी गायों के रेवड़ के बीच उसके रहने का प्रबंध किया। गर्ग को किसी प्रकार का कष्ट न हो, इस लिए उसको सारी सुविधाएँ दी गईं । उसके लिए एक उत्तम भवन बना दिया गया, जिसके चारों ओर उद्यान और गोशालाएँ निर्मित हुई । गर्ग को प्राप्त वरदान को माँगने का अवसर ही न आए ऐसी सब व्यवस्था की गई ।

इस प्रकार गर्ग गायों के बीच आराम की जिंदगी काटने लगा। एक समय की बात है, कोई अप्सरा गोपी के रूप में उसके पास आन पहुँची। ईश्वर के आदेशानुसार वह गर्भवती बनी और उसने काल-यवन को जन्म दिया। यवन राजा ने उस बालक को अपने पुत्र के रूप में पाल-पोस कर बड़ा किया। कालयवन एक अत्यन्त तेजस्वी तथा पराक्रमी युवक के रूप में विकसित हुआ। वह किसी की परवाह नहीं किया करता था।

एक बार नारद यवन राजा के पास आया। कालयवन ने उस से पूछा— "संसार में सब से महान पराक्रमी वीर कौन है ?"

"आजकल यादवों से बढ़कर और कोई महान वीर मुझे तो विश्व में दिखाई नहीं देते ।" अपना अभिप्राय बताते हुए नारद ने यादवों की भारी प्रशंसा की । नारद की ये बातें सुनकर कालयवन के मन में यादवों के प्रति अत्यन्त ईर्ष्या पैदा हुई। शकवंशी राजा तथा हिमालय में निवास करनेवाले दस्यु तो उसकी उंगलियों पर नाचते थे, उन सब को एकत्रित कर कालयवन ने एक सेना का संगठन किया। हाथी, घोड़े और गधों को बड़ी संख्या में साथ लिये कालयवन अपनी सेना के साथ मथुरा पर आक्रमण करने निकल पड़ा।

नारद के मुँह से यह सारा वृत्त कृष्ण ने जान लिया था। तत्कालीन स्थिति पर सम्यक् विचार करके ही मथुरा छोड़नेका निश्चय हुआ था। कृष्ण

ने इसकी सूचना पहले ही यादवों को दे रखी थी।

इसके बाद कृष्ण ने एक और कार्य भी संपन्न किया। उसने एक पात्र में कालसर्प को रखवा दिया और उस पर कपड़ा बाँध दिया। अपने एक दूतके साथ यह पात्र संदेश के साथ कालयवन के पास भेज दिया— "कृष्ण का पराक्रम इस पात्र में रखे काल सर्प-सा है !"

यह संदेश सुनकर कालयवन ने तत्काल तो कुछ उत्तर न दिया। कालसर्प वाले पात्र में उसने कुछ चींटों को डालकर फिर उस को कपड़े से लपेटा और उसे फिर कृष्ण को वापस देनेके लिए कहा। अर्थात् कालयवन ने कृष्ण को यह संदेश भेजा कि 'तुम चाहे कितने ही बलवान क्यों न हो, अनेकों के बीच तुम अकेले फँस जाओगे तो तुम्हारा पराक्रम निरर्थक सिद्ध होगा।' उसके इसी भाव को समझकर कृष्ण यादवों के साथ मथुरा छोड़कर चल पड़ा था।

इसके बाद कृष्ण अकेला निःशस्त्र हो द्वारवती से निकला और अपने शत्रु के नगर में पहुँचा। वहाँ कृष्ण को सब ने पहचान लिया और एक ही हो हल्ला मचाया—" इस कृष्ण को पकड़ लो, घेर लो इसे।" कालयवन को भी कृष्ण के आगमन का समाचार मिला। वह भी निःशस्त्र हो पैदल चलकर कृष्ण के समीप आया। कृष्ण ने उसकी ओर हाथ बढ़ाया, पर तत्क्षण उसे वापस खींच लिया, और द्रुत गति से एक गुफा के भीतर प्रवेश किया। उस गुफा में मुचिकुन्द नामक एक व्यक्ति सो रहा था। मुचिकुन्द मांधाता का पुत्र

था। उसने देवासुरों के संग्राम में बहुत समय तक युद्ध करके देवताओं को विजय दिलाई थी, और उसके बाद अपनी थकावट मिटाने के लिए वह सो रहा था। सोने के पहले उसने एक वर प्राप्त किया था—जो व्यक्ति उसकी निद्रा का भंग करेगा, उसको मुचिकुंद की दृष्टि ही भस्म कर देगी। कृष्ण यह सब जानता था। गुफ़ा में प्रवेश करते ही कृष्ण मुचिकुन्द केसिरहाने की ओर छिप गया।

कालयवन कृष्ण के पीछे गुफ़ा में घुस गया। सोनेवाले मुचिकुन्द को उसने इस भ्रम में देखा कि वही कृष्ण है। उस पर लात मार कर बोला— "तुम इस प्रकार अपनी मौत से बचना चाहते हो ? उठो, तुम्हारे बल-पराक्रम का पता हमें चल
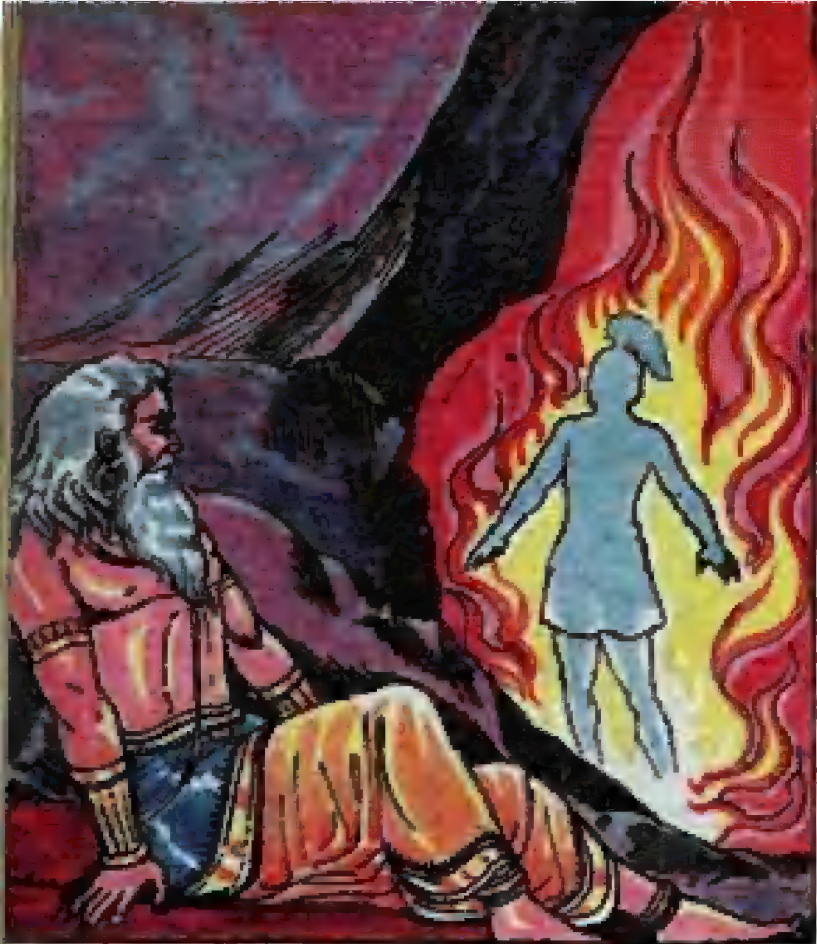
गया है ।" यों कहते हुए उसका बहुत उपहास किया और और दो-चार लातें जमा दीं ।

नींद से जागकर मुचिकुन्द उठ बैठा तो उसने कालयवन की ओर अपनी क्रोधभरी दृष्टि दौड़ाई । दूसरे ही क्षण कालयवन वज्रपात से भस्म होनेवाले वृक्ष की भाँति जलकर राख हो गया ।

तब कृष्ण मुचिकुन्द के सामने आकर बोला— "मित्र, नारद के द्वारा मुझे यह समाचार मिला कि आप यहाँ पर विश्राम कर रहे हैं । मुझे संतोष है कि आप के द्वारा मेरा कार्य अच्छी तरह संपन्न हुआ । अब आप मुझे यहाँ से चले जानेकी अनुमति दे देंगे ?"

कृष्ण को देखते हुए मुचिकुन्द ने प्रश्न किया— "मैं पूछ सकता हूँ, आप कौन हैं ? किस काम से आप यहाँ पधारे हैं ? मेरी निद्रा में भंग डालनेवाला वह व्यक्ति कौन था ? मैं यहाँ कब से सो रहा हूँ ? अगर आप को कुछ पता हो तो मुझे बता सकेंगे ?"

कृष्ण ने कहा— "नहुष चन्द्र की समता करनेवाले व्यक्ति हैं । उनका पुत्र है ययाती । ययाती के पांच पुत्रों में ज्येष्ठ पुत्र हैं यदु । यदु की संतानों में एक वसुदेव हुआ । वसुदेव के एक देवकी नाम की पत्नी थी, उनका पुत्र मैं । वसुदेव के एक दूसरी रोहिणी नाम की पत्नी थी, उससे बलराम का जन्म हुआ । मैं बलराम का छोटा भाई हूँ । मुझे कृष्ण कहते हैं । आपकी क्रोधाग्नि में जो जल गया, वह व्यक्ति था सुप्रसिद्ध कालयवन । उसका जन्म वरदान से हुआ था और किसी प्रकार उसकी मृत्यु असंभव थी । वह मेरा शत्रु था । मैंने सुना है कि आपका जन्म त्रेता युग में हुआ था । अभी तो कलि युग आने को है ।"

मुचिकुन्द गुफा से बाहर निकला तो उसके मन में पुनः राज्य-शासन करने की बात आयी । परंतु पृथ्वी पर निवास करनेवाले मनुष्यों की अल्पायु, दुर्बुद्धि एवं अन्य साहस देखकर उसने राज्य करने की कामना छोड़ दी । तपस्या करनेके इरादे से वह हिमालय चला गया ।

अपने प्रमुख शत्रु कालयवन की मृत्यु के पश्चात कृष्ण ने शत्रु-पक्ष के प्रमुख वीरों का अपने दिव्यास्त्रों से संहार किया और अन्य सेनाओं को अपने अधीन कर लिया । फिर कृष्ण अपने वंशवालों से मिलने वहाँ से चला गया ।
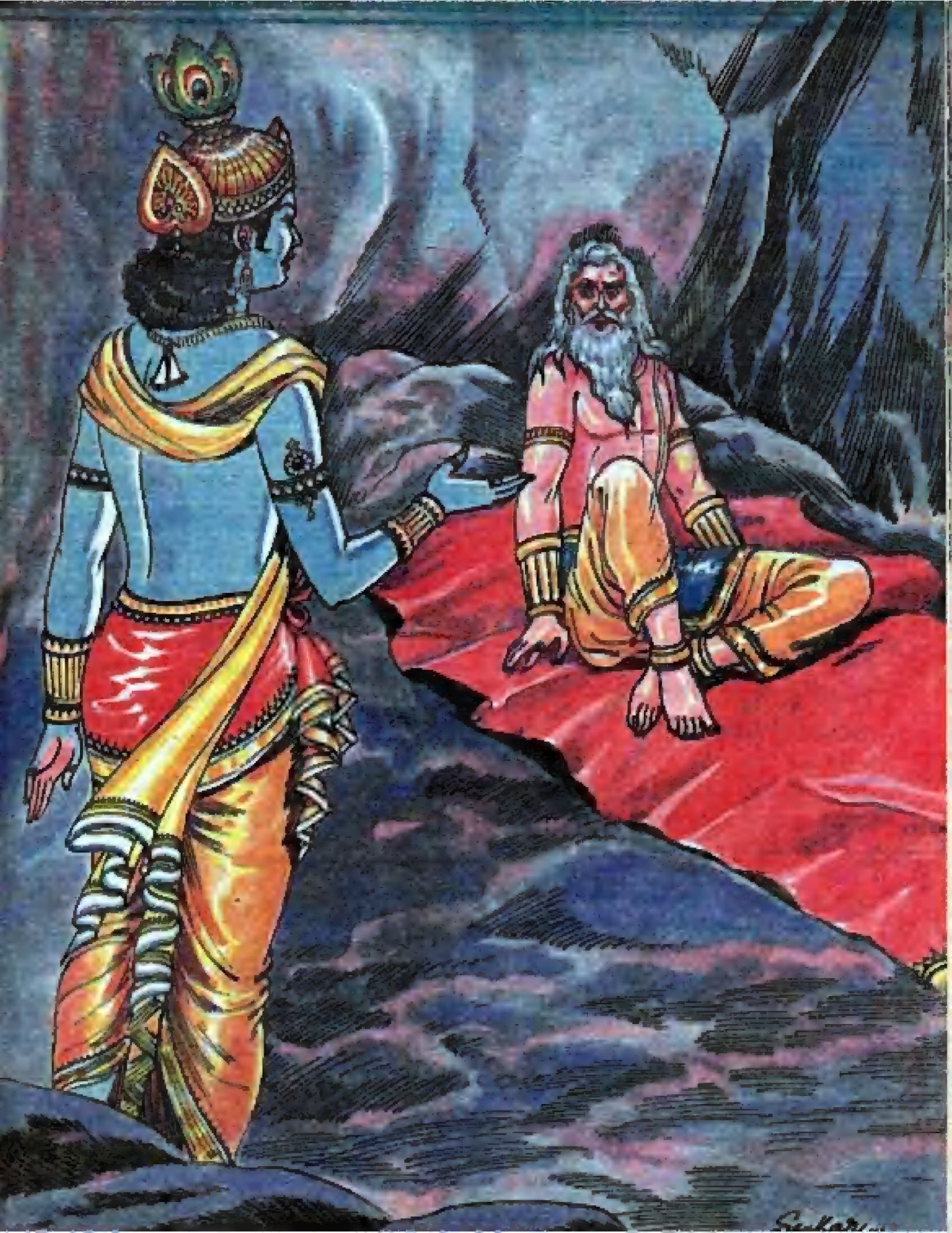
इस घटना के बाद ही द्वारवती का निर्माण हुआ ।

द्वारवती के निर्माण के लिए कृष्ण ने विश्वकर्मा की सहायता पाने का निश्चय किया और उसका स्मरण किया । तुरन्त ही विश्वकर्मा प्रत्यक्ष हुआ और उसने कृष्ण से पूछा—"आप ने कैसे मेरा स्मरण किया ? मैं आप की क्या सहायता कर सकता हूँ ? मुझ से जो बनेगा, मैं अवश्य करूँगा ।"

कृष्ण ने निवेदन किया— "स्वर्ग में जैसे इन्द्र नगरी श्रेष्ठ है, उसी के समान एक श्रेष्ठ नगरी पृथ्वी पर बनाकर उसे मुझे सौंप सकेंगे ?"

"इस सारी जनता को बसाने लायक नगर का निर्माण करने के लिए यह भूमि पर्याप्त नहीं है । हाँ, समुद्र थोड़ा पीछे हट गया तो यहीं एक विशाल और सुन्दर नगरी बनाना संभव है ।" विश्वकर्मा ने कहा ।

इस पर कृष्ण ने समुद्र की प्रार्थना की । समुद्र प्रत्यक्ष अवतीर्ण हुआ और चारों तरफ़ बारह योजनों की भूमि छोड़कर स्वयं पीछे हट गया ।

तब विश्वकर्मा ने उस स्थान पर एक दिव्य नगरी का निर्माण किया । स्वर्णिम दुर्ग, गगनचुंबी मणिमय गोपुर, ऊँचे ऊँचे महलों की पंक्तियाँ, अद्भुत भवन, प्रशस्त राजपथ, चैत्य, सभा-भवन, मण्डप, तोरण, बुर्ज, कुएँ, सरोवर, शिलोद्यान आदि की रचना की गई । नगर के मध्य में एक विशाल राजप्रासाद का निर्माण किया गया । उस राजप्रासाद की चारों ओर बढ़िया उद्यान बनाए गये । उद्यानों में बने फुआरों से जब निर्मल पानी की धाराएँ फूट निकलती तो ऐसा दृश्य दिखाई देता कि बस देखते ही रहें । चाँदनी रातों में इन उद्यानों में अवर्णनीय शोभा दिखाई देती । कृष्ण के बैठने के लिए एक सुवर्ण-सिंहासन बनाया गया । ऐसा सिंहासन आज तक किसी ने और कहीं नहीं देखा था । फिर राजभवन में कृष्ण एक ऊँचे आसन पर विराजमान हुए । प्रमुख यादवों की एक सभा आयोजित की गई । उस सभा में कृष्ण ने विश्वकर्मा का समुचित रूप में सत्कार किया और उन्हें इन्द्रलोक भेज दिया ।

वनदेवी की सलाह

किसी गाँव में चमटक नाम का एक व्यापारी रहता था । उसका व्यापार बहुत अच्छा चल रहा था । हर साल फायदे के रूप में वह अच्छा धन जोड़ता । वैसे वह दानी भी था । द्वार पर आया अतिथि कुछ पाये बगैर नहीं जाता था । व्यापार में प्राप्त लाभ का कुछ हिस्सा वह ग़रीबों को दान देने में खर्च करता था । इससे उसे जीवन में शांति मिलती थी । एक बार व्यापार में उसे अपार नुकसान हुआ, वह अपना सर्वस्व खो बैठा और भिखारी बन गया ।

अब उसे अपने गाँव में रहना अपमानजनक मालूम हुआ । अपनी पत्नी तथा तीन बच्चों को लेकर वह दूसरे किसी गाँव के लिए चल पड़ा । रास्ते में उसे एक साधू मिल गया । उसने कहा—"सुनो, तुम चमटक हो न ? जब तुम्हारा जीवन वैभव-संपन्न था, तब साधु-संतों का श्रध्दा-भक्तिपूर्वक तुमने खूब सत्कार किया । तुम हमेशा अभ्यागतों का आदर-सत्कार करते रहे । ग़रीबों को दान-धर्म करते रहे।तुमने कभी किसी का दिल नहीं दुखाया । इस प्रकार का जीवन बितानेवालों की हमेशा तरक्की ही होती है । भगवान की कृपा ऐसे लोगों पर हमेशा बनी रहती है । समझ में नहीं आता, तुम्हारी यों दुर्गति क्यों हो गई है ? तुम्हें क्या लगता है ?"

चमटक ने अपने दुर्भाग्य का रोना साधु को सुनाया । साधु ने कहा— "तुम्हारे जैसे भले आदमी पर ऐसी विपदा तो नहीं आनी चाहिए । तुमने जीवन भर खुद मेहनत कभी नहीं की, दूसरों के परिश्रम और मेहनत पर तुम सुख भोगते रहे । स्वयं शारीरिक परिश्रम करके कुछ दिन बिताओ, तो तुम्हारे अच्छे दिन लौट आ सकते हैं । तब भी शारीरिक श्रम करना मत छोड़ो ।"

चमटक ने विनय के साथ निवेदन किया— "स्वामी, मैं आपकी सलाह पर ज़रूर चलूँगा ।

जिस गाँव में मैंने सुख-समृद्धि पूर्ण जीवन बिताया है, वहाँ दरिद्र अवस्था में अपने दिन नहीं काट सकता। इसी लिए इस गाँव को छोड़कर कहीं और जा रहा हूँ। वहाँ अपनी नई ज़िंदगी शुरू करूँगा। अब तक के जीवन में अगर मैंने कुछ ग़लतियाँ की हैं, तो आइंदा उन्हें दुबारा नहीं करूँगा। पर ज़रूरी है कि कोई मुझे अपनी ग़लती बता तो दें। आप मुझे सलाह दीजिए कि नये स्थान पर किस प्रकार का जीवन मुझे बिताना चाहिए। मैं आपका आभारी रहूँगा।"

साधु कुछ देर तक सोचता रहा, फिर उसने चमटक से कहा— "देखो, अब तक तुमनेसुख-मय जीवन बिताया है, इस लिए परिश्रम करने में तुम्हें कठिनाई होगी ज़रूर! सच्चे सुख की कुँजी है शारीरिक परिश्रम। जो शरीर को बराबर काम में लाता है उसको शरीर और मन दोनों का स्वास्थ्य मिलता है। इस लिए तुम शारीरिक श्रम के महत्व को समझो। तुम्हें जीवन में एक नया आनन्द मिलेगा। फिर कोई कठिनाई तुम्हें परेशान नहीं करेगी।मैं तुम्हें एक वर देता हूँ— तुम परिश्रम करने लगो, तो साधारण मनुष्य की तुलना में तुम दस गुना काम करोगे। अब तुम्हें चिन्ता किस बात की ?"

चमटक ने साधु से प्राप्त वरदान को महा-प्रसाद माना और साधुको भक्तिपूर्वक प्रणाम किया। फिर पत्नी और बच्चों के साथ पड़ोसवाले गाँव की ओर रवाना हुआ।

गाँव में पहुँचकर चमटक ने एक कुल्हाड़ी प्राप्त कर ली और गाँव के पासवाले जंगल की ओर चल पड़ा। उस गाँव में लकड़ी काटकर बेचनेवाले लोगों की संख्या पहले ही बहुत थी। अतः लकड़ी तोड़नेका व्यवसाय करनेवालों ने चमटक का खूब विरोध किया। चमटक निराश हो गया। उसकी यह हालत देखकर पत्नी ने समझाया— "अभी आपको मेरे साथ की अधिक ज़रूरत है। अगर ज़िंदा रहना है, तो सभी एक साथ जीयेंगे। वरना हम सब एक साथ अपनी जीवन-लीला समाप्त करेंगे!"

पत्नी की बात से उल्लसित हो चमटक आगे बढ़ा और उसने एक अच्छे वृक्ष को चुना। उसने उसे काटने के लिए कुल्हाड़ी उठायी, पर कुल्हाड़ी से वृक्ष पर प्रहार करने के पहले ही उसे एक

भयंकर अट्टहास सुनाई पड़ा । दूसरे ही क्षण उस वृक्ष ने एक भयानक आकृति धारण की और बोल उठा— "तुम मुझे छेड़ रहे हो, याद रखो मैं तुम्हें और तुम्हारे परिवार को निगल डालूँगा। मुझ पर कुल्हाड़ी चलाने में तुमको मज़ा आता है ? शायद मुझे काटकर जो लकड़ी मिलेगी, उसे बेचकर तुम धन कमाना चाहते हो । शायद तुम जानते नहीं, इससे आज भले ही तुम्हारा फ़ायदा होगा, पर अन्त में तुम्हें पछताना पड़ेगा । तुम समझदार हो, इस लिए तुम्हें समझा रहा हूँ । मैं तुम्हें नुकसान नहीं पहुँचाना चाहता । मेरी सलाह मानो तो यह काम मत करना ।" ये शब्द सुनकर चमटक एकदम चकित-सा रह गया ।

उस भयंकर आकृति ने पुनः चेतावनी दी — "भाग जाओ, यहाँ से जल्दी भाग जाओ, नहीं तो मैं तुम सब को खा जाऊँगा ।"

इस बीच चमटक थोड़ा संभल गया । उसने उस आकृति से कहा— "अगर तुम मुझे और मेरे परिवार को निगल डालो, तो मुझे बेशक कोई आपत्ति नहीं है । मैं यहाँ लकड़ी काटनेके लिए आया हूँ, मैंने कोई अपराध तो नहीं किया है । अगर कोई परिश्रम करके जीना चाहता है तो उसको रोकना कहाँ का न्याय है, अपराध तुम्हीं कर रहे हो ।"

बस, पल भर में वह भयंकर आकृति एक विशालकाय वृक्ष के रूप में परिवर्तित हो गई । चमटक विस्मित हो यह अद्भुत परिवर्तन देखता रहा । उसने फिर कुल्हाड़ी ऊपर उठाई ।

"चमटक, रुक जाओ !" यह पुकार सुनकर वह रुक गया ।
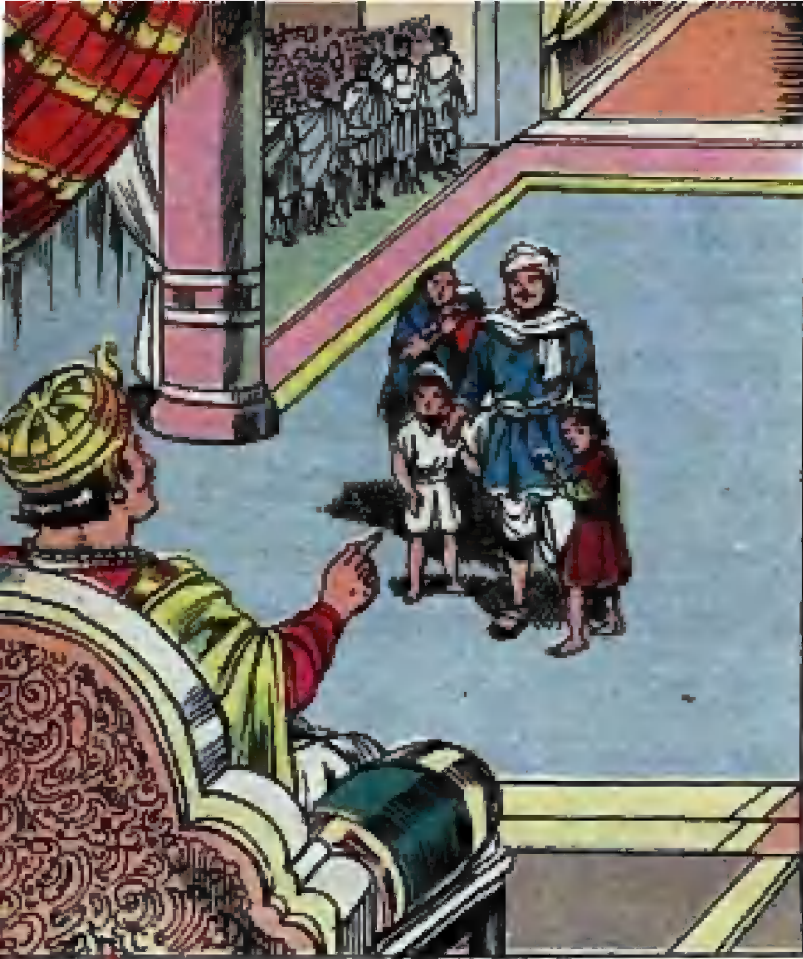
उसके सामने एक देवी साकार खड़ी हो गई। देवी ने कहा— "चमटक, मैं हूँ वनदेवी। इस वन के वृक्ष और प्राणियों की रक्षा करना मेरा काम है। यहाँ पर जितने वृक्ष हैं, प्रत्येक के आश्रय में अनेक प्राणी जी रहे हैं। तुम हम लोगों को क्यों सता रहे हो ? तुम्हारे हाथ में महिमायुक्त कुल्हाड़ी है। इस लिए जंगल के खूँखार जानवर तुम्हारी या तुम्हारे परिवारवालों की कोई हानि नहीं कर पाये। राक्षस की आकृति धारण कर वृक्ष ने तुमको धमकाया, पर तुम डरे नहीं। इसीलिए मुझे यहाँ प्रत्यक्ष होना पड़ा। मेरी सलाह मानकर तुम इस वन को छोड़ कर चले जाओ।"

चमटक ने चकित होकर कहा— "वन-देवीजी, आपकी सलाह ठीक है। लेकिन मेरे साथ मेरा परिवार भी तो है। सब का पेट पालना मेरा कर्तव्य है। आप बताएँगी कि मैं क्या करूँ ?"

वनदेवी ने चमटक को समझाया— "तुम्हें क्या करना चाहिए, यह तुम्हारे देश के राजा तुमको बताएँगे। राजा के आदेश के सामने मनुष्यों के साथ देवताओं को भी सिर झुकाना पड़ता है। अगर राजा कहें तो मैं भी तुम्हें नहीं रोकूँगी। राज्य की भलाई किसमें है यह राजा ही जानते हैं। राजा ने अगर पेड़ काटने की तुमको सलाह दी, तो ज़रूर वृक्षों का सर्वनाश करो। अगर राजा कोई अनुचित काम करता है, तो उसको एक दिन उसकी सज़ा ज़रूर मिल कर रहेगी।"

"अच्छी बात है, तो मैं राजा के दर्शन कर लूँगा। पर इसमें जाने कितना समय लगेगा !" चमटक ने शंका प्रदर्शित की।

वनदेवी ने चमटक को आँखें मूँदने को कहा। चमटक ने वनदेवी की आज्ञा का पालन किया।

चमटक ने अपने को परिवार सहित किसी राजा के भरे दरबार में खड़ा पाया। दरबार में बैठे राजा और अन्य सदस्य उस परिवार की ओर अचरज भरी निगाह से देख रहे हैं। चमटक ने अपनी सारी कहानी राजा को सुनायी।

चमटक की ओर देखते हुए राजा ने कहा— "तुम मेरे राज्य के नागरिक हो, तुम्हारी रक्षा करनेकी ज़िम्मेदारी मेरी है। तुम्हारी योग्यता के अनुसार मैं तुम्हें उचित काम दूँगा। तुम आराम से ज़िंदगी बसर करो।"

चमटक ने आपत्ति उठाते हुए राजा से कहा— "साधु ने मुझे वर दिया है— हाथ में कुल्हाड़ी लेकर मैं परिश्रम करूँ तो मेरी सारी भूलों का प्रायश्चित हो जाएगा। पेड़ को काटने से रोकनेवाली वनदेवी कौन होती है ? आप वनदेवी को आदेश दीजियेगा कि मैं अपना काम बेखटके कर सकूँ !"

चमटक की बात राजा को उचित ही लगी। राजा ने चमटक के हाथ से कुल्हाड़ी ले ली और अकेला ही वन की ओर चल पड़ा।

राजा ने नवदेवी से मुलाकात की। राजा का संदेह जानकर वनदेवी ने समझाकर कहा— "राजन्, आप जिस प्रकार अपनी प्रजा की सुरक्षा करते हैं, वैसे ही मैं वन की रक्षा करती हूँ। इस वन में जितने विविध प्रकार के पेड़ हैं, ऐसे ही किसी और स्थान पर आप लगवा दीजिये। ऐसे ही एक वन बन जाने तक प्रतीक्षा कीजिए। तब एक तीसरे वन का शुभारंभ कीजिए, फिर इस वन के वृक्षों को जलावन के काम लाइये। मतलब यह है कि एक वन नष्ट करने के पहले उसी प्रकार का एक और वन अवश्य तैयार हो जाना चाहिए। एक और वन के निर्माण का प्रारंभ होना चाहिए। अगर इस बात को आप स्वीकार करेंगे तो आपका तथा आपकी प्रजा का कल्याण होगा। वरना आपके राज्य का सर्वनाश अवश्यंभावी है।"

राजा चुपचाप वन से लौट आया और उसने चमटक से कहा— "देखो, अगर कुल्हाड़ी लेकर तुम वृक्षों का नाश करना चाहो तो इसके लिए तुम्हें बरसों प्रतीक्षा करनी पड़ेगी। इस देश में लकड़हारों की संख्या वैसे भी बहुत अधिक है। पेड़ कम होने के कारण उनको भी पर्याप्त काम नहीं मिल रहा है। इस देश के लिए आवश्यक जलानेकी लकड़ी पड़ोस के देश से खरीदनी पड़ती है। इसलिए मेरी सलाह है तुम कोई और पेशा ढूँढ़ लो।"
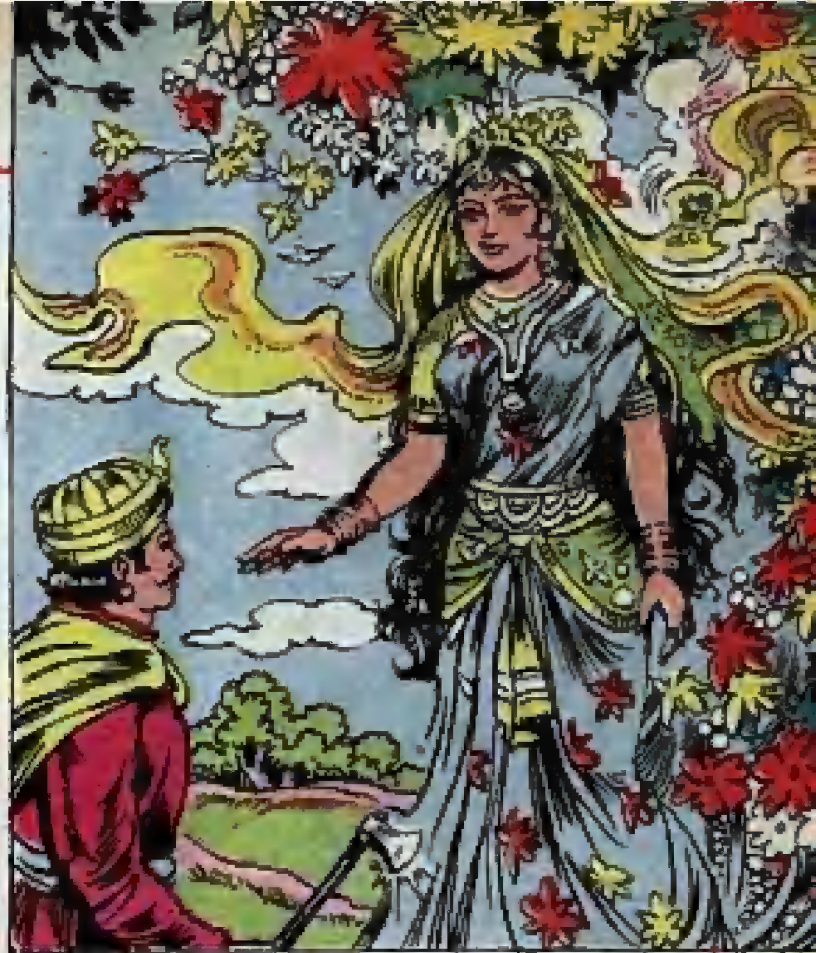
अब चमटक अपने परिवार के साथ पड़ोस के देश में चला गया। वहाँ लकड़ी काटने के लिए किसी प्रकार का प्रतिबंध नहीं था। साधु से मिले वरदान के कारण वह अकेला इतनी लकड़ी काट सकता था, जितनी पचास आदमी मिलकर काट सकते थे। अतः थोड़े ही दिनों में वह बड़ा संपन्न बन गया। अपने देश में अपार वृक्ष-संपदा होते

हुए भी पड़ोस के देश से अधिक दाम देकर लकड़ी खरीदनेवाले राजा की मूर्खता पर चमटक मन-ही-मन हंस पड़ता ।

यों कुछ वर्ष बीत गये । एक साल चमटक के देश में भयंकर अकाल पड़ा । बरसात की कमी के कारण लोग बूँद-बूँद पानी के लिए तरसने लगे । पानी न होने के कारण फसल नहीं हुई । अनाज के अभाव में जनता तड़प-तड़प कर मरने लगी । अकाल को हटाने के लिए राजा ने यज्ञ-याग करवाये, पर कुछ फ़ायदा न हुआ ।

कई साल यही हाल रहा, उस देश की हालत बिगड़ती ही गई । ऐसी हालत में वहाँ के लोग उस देश को छोड़कर अन्य सुसंपन्न देश में जाने लगे । दरिद्रता के कारण देश में चोरियाँ, लूटपाट, डकैतियाँ खूब बढ़ी । साधारण जनता के लिए जीना मुश्किल हो गया ।

अब चमटक ने भी अपने देश में लौट जानेका निश्चय कर लिया । एक और मुसीबत आई, वह एक बीमारी का शिकार बन गया । उसके मुँह पर दाग़ पड़ गये । देश के अच्छे अच्छे वैद्य भी उस रोग का निदान न कर पाये । आखिर क्या किया जाय यह चमटक की समझ में नहीं आया । एक दिन राजा के सेवक आकर उसे कैद करके ले गये । चमटक को एक सप्ताह के लिए कारावास में रहना पड़ा । उसे मालूम नहीं हुआ कि किस अपराध के कारण उसे कारावास में रख दिया गया है । उसने देखा कारागार में उसी के समान और भी कई लोग है जिनके चेहरों पर दाग़ पड़े हैं । चमटक को बड़ा आश्चर्य हुआ ।

एक हफ़्ते बाद राजा ने सभी कैदियों को इकट्ठा कराकर उनसे कहा— "भाइयों, मुझे माफ़ कर दो कि मैंने तुम्हारे साथ अत्यन्त क्रूरतापूर्ण व्यवहार किया है । वनदेवी ने मुझे सूचना दी थी कि किसी वन का नाश करने से पहले नये वन लगाने चाहिए, परंतु तात्कालिक मोह में पड़कर मैंने उसकी उपेक्षा की । किसी भी देश की जलवायु वनों के कारण ही संतुलित बनी रहती है, वर्षा समय पर होती है । यदि मानव अपना जीवन सुख-शांति के साथ बिताना चाहता है, तो वनों की रक्षा करना अत्यन्त आवश्यक है । पड़ोस के देश के राजा ने इस बात को अच्छी

तरह समझ लिया है । इस लिए वह देश संपन्न और समृद्ध है ।

जो हुआ, सो हो गया । अब हमारे देश में पेड़ काटनेवालों को कठोर दण्ड दिया जाएगा । वनदेवी ने सपने में आकर मुझे बताया है कि वनो के प्रति अत्याचार करनेवालों के चेहरों पर दाग़ पड़ जाते हैं ।" यह कहते हुए राजा ने अपनी नकाब उठाते हुए अपना चेहरा सब को दिखा दिया ।

राजा के चेहरे पर भी उसी के समान दाग़ देख कर चमटक ने चौंक कर आँखें खोल दीं ।

उसके सामने वनदेवी ने कहा— "चमटक, तुमने स्वयं अपनी आँखों से देखा न ? मेरी चेतावनी का पालन न कर यदि कोई वनों का सर्वनाश करने पर तुल जाता है तो उसे कैसी मुसीबतों का सामना करना पड़ता है ! मेरी चेतावनी की उपेक्षा करनेवाले कुछ राजा भी हैं। आज उनके देश रेगिस्तान बन बैठे हैं ।"

चमटक ने हाथ जोड़कर वनदेवी को प्रणाम किया और पूछा— "देवीजी, आदेश दीजिए कि मुझे अपने परिवार के पोषण के लिए कौन-सा पेशा करना चाहिए ?"

वनदेवी ने समझाया— "चमटक, तुम्हारे पास तो महिमा भरी कुल्हाड़ी है, इसलिए पेड़ों को काटकर और लकड़ी बेच कर जीने की आवश्यकता नहीं है । तुम्हें तो साधु का वरदान भी प्राप्त है । तुम हल चलाकर खेत जोतो, तो भी तुम दूसरों की अपेक्षा दस गुनी अधिक फ़सल पैदा कर सकते हो ।"

वनदेवी के आशीर्वाद पाकर चमटक अपने गाँव लौट आया । बंजर पड़ी जमीन को खेती के योग्य बनाना शुरू किया । चमटक को खेती-बाड़ी के काम में अच्छी सफलता मिली । अपनी दरिद्रता की पीड़ा से मुक्त होकर पत्नी व बच्चों के साथ वह सुखपूर्ण जीवन बिताने लगा ।

षराब

पोलण्ड देश के निवासियों का यह विश्वास था कि उस देश के खदानों में मानव जैसे भूत निवास करते हैं। उन्हें वे लोग 'षराब' नाम से जानते थे।

ये षराब भूतल से कभी ऊपर नहीं आते थे। खदानों में काम करनेवाले श्रमिकों के साथ मिलकर वे भी काम किया करते थे। वे औसतन आदमियों से कुछ नाटे होते थे। उत्तम स्वभाव वाले व्यक्तियों की वे अनेक प्रकार से मदद करते थे। लोहेवाली मिट्टी जहाँ कम हो, वहाँ पर काम करनेवाले आदमियों को वे ऐसे स्थान दिखाते थे, जहाँ मिट्टी में लोह की मात्रा अधिक हो।

मगर वे दुष्ट लोगों को कतई पसन्द नहीं करते थे। वे जब ऐसे किसी पर नाराज़ हो जाते तो वे खदान से लोहा गायब करके ज़मीन के और अन्दर गहराई तक ले जाते थे; या ऐसा षड़यंत्र रचते थे, जिससे ऊपर की मिट्टी टूटकर उनपर गिर पड़े।

किसी एक नमक की खान में एक मिस्त्री था। उस खान में जब एक मज़दूर मर गया, तब उस मज़दूर की पत्नी को मिस्त्री ने मुआवज़ा नहीं चुकाया और उल्टे उसी पर आरोप लगाया कि इस बात का क्या सबूत है कि यह स्त्री उसी मृत मज़दूर कि पत्नी है। अन्य मज़दूरों ने यह गवाही दी कि वह उसी मज़दूर की पत्नी है, फिर भी मिस्त्री ने वह सुना अनसुना कर दिया। इस घटना के एक सप्ताह बाद वह मिस्त्री एक सुरंग से होकर चल रहा था, कि ऊपर से छत अचानक टूट कर मिस्त्री मर गया।

माना जाता है कि युद्ध-काल में धनी व संपन्न व्यक्ति अपनी संपत्ति व निधियों को इन्हीं नमक के खदानों में छिपाया करते थे। ऐसी कुछ निधियाँ सदा के लिये इन खदानों में दब कर रह गयीं। कई लोगों ने उन को खोजने का प्रयास किया.

पोलैंड की लोककथा

लेकिन खोजते समय अकारण ही उनके हाथों के दीप बुझ जाते थे !

एक बार एक षराब ने खदान के दो मज़दूरों को गुप्त-निधि का स्थान दिखाने का आश्वासन दिया। षराब के साथ चलते वक्त एक मज़दूर एक लकड़ी को काटकर उसके टुकडे फेंकता गया। आखिर उन्होंने अपनी आँखों से वह ख़ज़ाना देखा; पर लौटते वक्त उसने देखा कि रास्ते पर से लकड़ी के टुकड़े गायब हैं ! यह देख दूसरे मज़दूर ने जाते वक्त खड़िया से दीवार पर निशान अंकित लिये। लेकिन वे चिन्ह भी मिट गये। इसलिये उन मज़दूरों ने जो ख़ज़ाना खुद अपनी आँखों से देखा था, उसे वे फिर कभी भी ढूँढ़ नहीं निकाल सके।

पोलंड में अत्यंत प्राचीन तथा विशाल ऐसा एक खदान था। उसमें इन षराबों की संख्या अधिक थी। इसलिये उनको कई भागों में बाँटा गया था और प्रत्येक विभाग में एक षराब रहा करता था। उस विभाग में काम करनेवाले मज़दूरों पर वह निगरानी रखता था। उन मज़दूरों का विश्वास था कि, यदि कभी किसीके साथ अन्याय हो तो षराब उसको ठीक न्याय दिलवाएगा।

एक बूढा कर्मचारी मेहनत टालकर शराब के नशे में धुंध र[illegible]ग था; इसलिये उसे किसी अच्छे खदान में काम नहीं मिलता था। एक दिन वह सुबह से शाम तक बिना शराब पिये कड़ी मेहनत करता रहा, पर उसे रत्तीभर लोहा भी नहीं मिला। इसपर निराश हो वह एक चट्टान पर बैठकर सोचने लगा—"मैं कैसा अभागा हूँ ! मुझे किसीकी भी सहायता प्राप्त नहीं है। ऐसे स्थान पर कठोर मेहनत करने से फ़ायदा ही क्या है !"
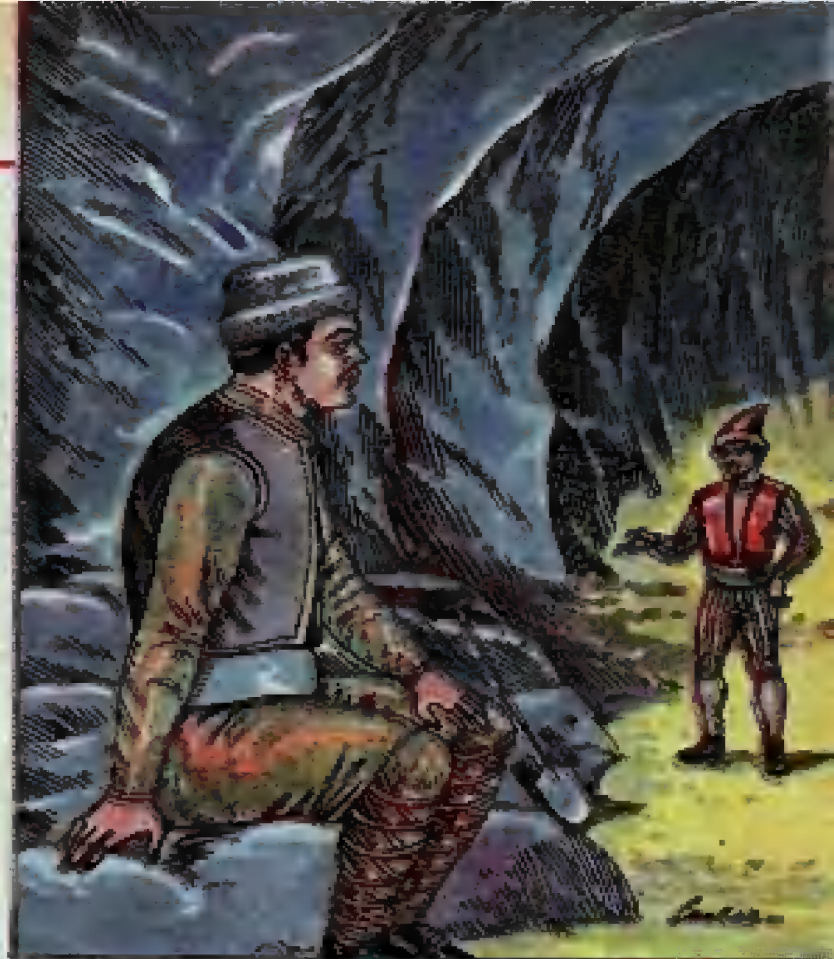
इतने में एक षराब ने उसे पुकार कर पूछा, "क्या तुम्हें खदान का यही भाग सौंपा गया है ?"

"मुझ जैसे को इससे अच्छी जगह कौन देगा भला ?" कर्मचारी ने दीनतापूर्वक उत्तर दिया।

"चलो मेरे साथ, मैं तुमको चाँदी की धातु प्राप्त होनेवाली जगह दिखला दूँगा। मेरी बात मानोगे तो तुम्हें अच्छा नफ़ा होगा।" षराब ने कहा।

वह बूढ़ा कर्मचारी षराब के साथ किसी प्रदेश

में पहुँचा । तब षराब बोला, "लो, देखो ! यहाँ पर खोद कर देखो, तो तुम्हें चाँदी मिलेगी । तुम उसको तोलो; जितनी तुम्हें मिलनी चाहिये उतनी ले लो और वहाँ पर पहुँच जाओ, जहाँ हम पहले मिले थे । वहाँ हम वह धन बाँट लेंगे ।"

बूढ़ा कर्मचारी प्रसन्नतापूर्वक अपने साथी कर्मचारियों के पास पहुँचा और बोला, "सुनो दोस्तों, एक स्थान पर बहुत-सारी कच्ची चाँदी है । उसे हम खोदेंगे, चलो मेरे साथ ।"

"अरे, यहाँ की खान में जस्ता छोड़ और कोई धातु नहीं है । चाँदी तो कभी की गायब हो गयी है तुम अगर मानते हो कि यहाँ चाँदी है;,तो तुम खुद ही खोद कर सारी चाँदी ले लो ।" यह कहकर वहाँ के कर्मचारियों ने उसका मज़ाक उड़ाया ।

फिर बूढ़ा कर्मचारी शराब पीने की आदत छोड़कर लगातार एक महीने तक तन तोड़कर कच्ची चाँदी खोदता रहा । इस प्रकार अपनी मज़दूरी के उसने कई हज़ार सिक्के प्राप्त किये । उन सिक्कों को एक थैले में डालकर वह उस जगह पहुँचा जहाँ वह पहले षराब से मिला था । षराब उसी के इंतज़ार में बैठा था ।

दोनों ने सिक्के बराबर बाँट लिये । आखिर एक सिक्का बच गया ।

षराब ने पूछा, "यह सिक्का अब किसका होगा ?"

"इसे तुम ही रख लो जनाब ।" बूढ़े ने कहा ।

"ओहो, इसका मतलब है कि तुम्हें धन का लालच नहीं है । तो चलो यह सारा धन तुम्हीं रख लो, मेरे किस काम का यह ! मगर देखो, दान-धर्म करना मत भूलो ।" इस प्रकार समझाकर षराब वहाँ से चला गया ।

बूढा कर्मचारी ज़िन्दगीभर दान-धर्म करता रहा, शराब पीना छोड़कर सुखपूर्वक उसने अपनी ज़िन्दगी बितायी ।

उसी खान में एक बार इससे भी बढ़कर एक अभुदत घटना घटी; और वह भी ऐसे ही एक इकलौते कर्मचारी के तहत ।

एक दिन एक षराब ने उस कर्मचारी को अकेले देखकर पूछा, "तुम अकेले क्यों काम कर रहे हो ? क्या मुझे भी अपना हिस्सेदार बनाओगे?

"इस ज़मीन में धातु की मात्रा कम है। यहाँ काम करने से एक आदमी का भी पेट नहीं भरता, ऐसी हालत में दोनों बाँटकर क्या खाक खायेंगे "

मैं तुम्हें बढिया जगह दिखा दूँगा। मेरे साथ चलो।" कहकर षराब उस मज़दूर को एक और प्रदेश में ले गया। वहाँ कच्ची धातु अपार थी। मज़दूर उत्साह में आकर वहाँ खोदने लगा। थोड़ी देर बाद षराब उसे भूगर्भ में और गहराई तक ले गया।

मज़दूर थक गया था। उसने थोड़ी देर विश्राम करने की इच्छा प्रकट की और उसके पास जो रोटी बची थी उसे खाकर उसने आराम किया।

नीन्द से वह जब जागा, तब तक षराब वहीं बैठा हुआ था। उसने मज़दूर से पूछा, "जानते हो तुम कितनी देर सोये थे ?"

"शायद दो घंटे !" कर्मचारी बोला।

षराब चुप रहा। और उसको दूसरे मार्ग से उसी जगह ले गया। उसके हाथ थोड़ा धन देकर षराब ने कहा, "गाँव में जाकर तुम रोटी खरीद लाओ।"

मज़दूर जब भूतल पर पहुँचा तब वहाँ पर काम करनेवाली चार मज़दूरनियाँ उसे देख कर घबड़ा गयीं और काम छोड़कर वहाँ से भाग खड़ी हुई। मज़दूर मन ही मन उन को गालियाँ सुनाकर गाँव में चला गया। पर गाँव में काफी परिवर्तन आ गया था। इतना कि आखिर वह पहचान पाया। वह एक दूकान पर पहुँचा और उसने साथ लाये सिक्के देकर रोटी माँगी। दूकानदार ने कहा, "ये सिक्के नहीं चलते।" उस दूकान के पास एक शिक्षित बुजुर्ग आदमी खड़ा था। उसने उन सिक्कों की जाँच करके कहा कि "ये सिक्के तो सौ साल पुराने हैं।"

कर्मचारी जान गया कि वह कम से कम सौ साल तक सोया रहा होगा। वह खान में लौट गया और षराब से बोला, "ऐसा लगता है कि मैं सौ साल तक सो गया था। अब मेरा क्या हाल होगा ?"

"कोई बात नहीं तुम अपने गाँव लौट जाओ। तुम दो साल से ज्यादा अधिक नहीं सोये थे। भली भाँति याद रखकर ठीक एक साल बाद मुझे

आकर मिलो । मैं यहीं मिलूँगा ।" कहकर षराब ने मज़दूर के हाथ थोड़ा स्वर्ण दे दिया ।

इस बार मज़दूर सीधे अपने घर पहुँच गया । उसने अपने अनुभव अपने बीबी-बच्चों और दोस्तों को सुनाये; पर उन लोगों ने उसकी बातों का विश्वास नहीं किया ।

एक साल बाद मज़दूर पुनः खान में उतर कर षराब से मिला ।

"इस बार मैं अवश्य तुम्हें ख़ज़ाना दिखा दूँगा मेरे साथ चलो ।" यह कहकर षराब उस कर्मचारी को ऐसे रास्ते से ले गया, जहाँ वास्तव में पहले से कोई मार्ग ही नहीं था । उजड़े हुए सुरंगों से होकर वह उसे काफी दूर ले गया । अन्त में वे एक ऐसे स्थान पर पहुँचे, जहाँ अपार ख़ज़ाना छिपा हुआ था ।

"सुनो, यह स्थान किसी समय ज़मीन के समीप ही था । कर्मचारी लोग बड़ी आसानी से इसे खोदकर ले जाते थे । लेकिन इस प्रकार बिना ज़्यादा मेहनत के प्राप्त धन को देख वे आदमी मद में आ गये, याने उनपर इस धन का मद चढ़ गया । इसके दण्डस्वरूप यह सारा ख़ज़ाना ज़मीन के गर्भ में उतर गया । अब तुम इसमें से जितना उठा सकते हो, उतना धन उठाकर ले जाओ और अपना जीवन सुखपूर्वक बिताओ ।" षराब ने उसे समझाया ।

"क्या मैं अन्य लोगों को भी इस ख़ज़ाने के बारे में जानकारी दे सकता हूँ ?" मज़दूर ने षराब से पूछा ।

"तुम यदि चाहते हो तो बता दो । यह भी बता दो कि वे लोग कुद्दाल-फावड़ा ले आकर यह खज़ाना खोदकर ले जा सकते हैं ।" षराब ने कहा

लेकिन कर्मचारी की बातों में किसी ने विश्वास नहीं किया । उनके मन में शंका थी कि ऐसा कभी हो ही नहीं सकता । सच्ची बात यह है कि इसके बाद कोई भी उस ख़ज़ाने का पता नहीं लगा सका ।

लंबे दाढ़

पश्चिम आफ्रिका के गाबून वाइपर नामक जहरीले सर्पों के दाढ़ ११/२ इंच लंबे होते हैं।

'मसेल' की चाल

मसेल नामका घोंघा सर्वप्रथम पैर के जैसे दिखनेवाली नस (वह साधारणतः घोंघे के भीतर होती है।) को आगे बढ़ाकर बाद में घोंघे के साथ शरीर को पैर तक आगे ले जाता है।

प्रकृति के आश्चर्य :

मध्य तथा दक्षिण अमेरिका में बसनेवाले एक जाति के बन्दर के तीसरे हाथ के रूप में काम देनेवाली लम्बी पूंछ होती है। पूंछ का छोर बिना रोओं के, नसों से भरा होता है, जिससे वह पेड़ की डालियों को मरोड़कर पकड़ पाता है।

फोटो-परिचयोक्ति-प्रतियोगिता :: पुरस्कार ५०)

पुरस्कृत परिचयोक्तियाँ फ़रवरी १९८९ के अंक में प्रकाशित की जायेंगी ।

M. Natarajan

M. Natarajan

★ उपर्युक्त फोटो की सही परिचयोक्तियाँ एक शब्द या छोटे वाक्य में हों । ★ दिसम्बर १० तक परिचयोक्तियाँ प्राप्त होनी चाहिए । ★ अत्युत्तम परिचयोक्ति को (दोनों परिचयोक्तियों को मिलाकर) ५० रु. का पुरस्कार दिया जाएगा । ★ दोनों परिचयोक्तियाँ केवल कार्ड पर लिखकर निम्न पते पर भेजें : चन्दामामा फोटो-परिचयोक्ति-प्रतियोगिता, मद्रास-२६

अक्तूबर के फोटो - परिणाम

प्रथम फोटो : हम हैं तेरे आराधक !

द्वितीय फोटो : सत्य अहिंसा के साधक !!

प्रेषक : घनश्याम भारती, पोस्ट : दौलतगंज, ग्वालियर - ४७४००१

चन्दामामा

भारत में वार्षिक चन्दा : रु. ३६-००

चन्दा भेजने का पता :

डॉल्टन एजेन्सीस, चन्दामामा बिल्डिंग्स, वडपलनी, मद्रास - ६०० ०२६

अन्य देशों के चन्दे सम्बन्धी विवरण के लिए निम्न पते पर लिखिये :

चन्दामामा पब्लिकेशन्स, चन्दामामा बिल्डिंग्स, वडपलनी, मद्रास - ६०० ०२६

Printed by B.V. REDDI at Prasad Process Private Ltd., 188 N.S.K. Salai, Madras 600 026 (India) and Published by B. VISHWANATHA REDDI on behalf of CHANDAMAMA PUBLICATIONS, Chandamama Buildings, Vadapalani, Madras 600 026 (India). Controlling Editor: NAGI REDDI.

अपने शिशु को दीजिए सैरेलॅक का अनूठा लाभ

कीजिए ठोस आहार की आदर्श शुरुआत

४ महीने की उम्र से आपके शिशु को दूध के साथ-साथ ठोस आहार की भी ज़रूरत होती है. उसे सैरेलॅक का अनूठा लाभ दीजिए.

पौष्टिकता का लाभ : सैरेलॅक का प्रत्येक आहार आपके शिशु की आवश्यकता के अनुसार सारे पौष्टिक तत्व प्रदान करता है — प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट, फ़ैट, विटामिन तथा मिनरल. सभी पूरी तरह संतुलित.

स्वाद का लाभ : शिशुओं को सैरेलॅक का स्वाद बहुत भाता है.

समय का लाभ : सैरेलॅक पहले से ही पकाया हुआ है और इसमें दूध और चीनी मौजूद है. केवल इसे उबाले हुए गुनगुने पानी में मिला दीजिए.

पसंद का लाभ : तीन तरह के सैरेलॅक में से आप अपनी पसंद का चुन सकती हैं.

कृपया डिब्बे पर दिए गए निर्देशों का सावधानी से पालन कीजिए ताकि इसके बनाने में स्वच्छता रहे और आपके शिशु को संतुलित पोषाहार मिले.

मुफ़्त ! सैरेलॅक बेबी केयर बुक
लिखिये : सैरेलॅक, पोस्ट बॉक्स नं. 3
नई दिल्ली-110 008

सैरेलॅक का वादा : स्वाद भरा संपूर्ण पोषाहार

No share prices,
no political fortunes, yet...

Over 40% of Heritage readers are professionals or executives, 61% from households with a professional / executive as the chief wage earner. Half hold a postgraduate degree or a professional diploma.

– from an IMRB survey conducted in Oct. 1986

It's an unusual magazine. It has a vision for today and tomorrow.

It features ancient cities and contemporary fiction, culture and scientific developments, instead of filmstar interviews and political gossip. And it has found a growing readership, an IMRB survey reveals. Professionals, executives and their families are reading The Heritage in depth – 40% from cover to cover, 42% more than half the magazine.

More than 80% of The Heritage readers are reading an issue more than once.

And over 90% are slowly building their own Heritage collection.

Isn't it time you discovered why?

CMP-2155

So much in store, month after month.